गोचाली

थारु भाषा तथा साहित्य सुधार समिति पश्चिमाञ्चल, नेपाल

वर्ष १ | २०२८ । १९७२ | अंक १

प्रधान सम्पादक
महेश चौधरिया

सह सम्पादक
अरविन्द चौधरी
भगवती प्रसाद,चौधरी
श्याम नारायण चौधरी
अम्मर राज चौधरी

व्यवस्थापक मंडल
टेक बहादुर चौधरी (अध्यक्ष)
चन्द्र प्रसाद चौधरी (महामंत्री)
गजराज चौधरी (मंत्री)
भगवती प्रसाद चौधरी (साहित्यमंत्री)
अरविन्द चौधरी (अर्थ मंत्री)
तुल्सी राम चौधरी (क्रीड़ामंत्री)
सगुन लाल चौधरी (प्रचार मंत्री)

प्रकाशक
थारु भाषा तथा साहित्य
सुधार समिति पश्चिमाञ्चल ,नेपाल

मुद्रक
अभय कुमार
आर्य भूषण प्रेस
ब्रह्माघाट, वाराणसी ।

मोल २। दुई रुपया

गोचाली सम्बन्धि नियम

❀

१—सब साथी हुक्र सम्पादक मण्डल हुन आपन रचना देना।

२—रचना छन्ना जिम्मा सम्पादक मण्डल के हाथम रहना।

३—पत्रिकाके लाग सम्पादक मण्डल सल्लाहाकार समिती व, कार्यकारीणी समिती से अन्तीम निर्णय लेन्ना।

४—सेण्टर कमिती के बैठक दाङ्गमें हुईना।

५—क्षेत्र भित्रमे जन्ना साथी रहहीं क्षेत्रीय युनिट के निर्णयानुसार एक जना सदस्य सेण्टर बैठकमा अईना।

६—आम्दानी खर्च के हिसाब थारु भाषा तथा साहित्य सुधार के जिम्ना रहना।

७—पत्रिका छपाईना जिम्मावार सम्पादक मण्डल के हाथ में रहना

८—लेख के जिम्मावार लेखक उपर रहना।

९—एक जना के एक से बढ़ता रचना नै रहना।

१०—बढ़ी जानकारी के लाग सम्पादक मण्डल सल्लाहाकार मण्डल व कार्यकारीणी मण्डल सो सम्बन्ध रखना।

सम्पादक के कलम से

❀

प्रस्तुत पहिला पत्रिका, हमार पहिला प्रयास हो। नाथ अवस्था भित्रक चञ्चल स्वभावले याकर भित्तर हुइ पर्ना स्वाभाविक त्रुटि अवस्य हुई। अबिकसित भाषा, साहित्यके बिकास नै याकर प्रकासन हो। यह भावना से प्रभावित होक हम्र के थारु भाषा तथा साहित्यिक पत्रिका के रूपम 'गोचाली' पत्रिकाके प्रकाशन कलंक हो। याकर अर्थ इ के नैहो कि हम्र जातिवाद व सम्प्रदायवादसे ग्रसित बाति, हम्र गरिब व धनिके बिचके फरकसे गरिब वन्क थिचल बाति। बेन हमारम ऊ गरिब परिवार से जौन आर्थिक दुरावस्थाले छिन्न-भिन्न हुइल बात (नेपालके ज्यामी किसाने हुक्र) हुकन्क संग हमार लगुक सम्बन्ध ह्वाय जाई नकि थारु जाती के नामम सम्पन्न परिवारसे। हम्र जातिवाद के नाऊम जाति सम्पन्न बनाइ नै चहति बल्कि जातिवाद के नाऊम हुइना सोसणके समाप्ति चहथि भलेहि ऊ थारु जात काकर नै ह्वाय। वहकारण इ पत्रिका भित्तर किसान समस्या, हुकन्क सामान्य अभिव्यक्ति जौन दबल बा, पिसल बा केल पैबि। जनलक बात हो थारु कलसे नेपालके बहु संख्यक कृसक हुइत। सताब्दियों से रहति आइल, हमार सभ्यता, संस्कृति व परम्परा अपनम केल सिमित रहल पा जाइथ। वह कारण हमारम भाग्यवादि, आध्यात्मबादि व संसयवादि मनोबृति प्रसस्त रूपम पाजाइथ। हम्र आपनम बढति गैल सोसण प्रबृतिह पुनरजन्मके फल दैक सन्तोष कर दरिथ व अन्ततोगत्वा बढति गैल सोसण के मारसे बरक

लाग आपन जन्म लक ठाऊ व आपन अन्य सामाजिक मान्यतान्से दूर छारा कथिं। लेकिन हुकन का थाहा कि ई त जिम्दार बदलाकेल हो, स्वसण खात्सा के प्रकृति नै हो कना। यह मान्यता नै हो ज्याकर कारण किसानन के मेहनत के एक-एक बूंदा पसिना बिहोकँ हम्र इ प्रकासन हं उठैलि। ज्याकर उद्येश्य आँजके भौतिकि परिस्थिति भित्तर चाहल हमार किसान भाईन्म चेतना फैलाय व आपन अधिकार प्राप्तिके संघर्षके लाग हुकन सक्षम बनाय। अस्तु।

पाठक बर्गन्से अनुरोध बा कि इ पत्रिकाह यह परिप्रेक्षम पढ़ देबि। यदि इ भित्तर पूर्णतः साहित्यिक मान्यता नै हो कैक आलोचना हुई कलसे याकर प्रति बराभारी अपराध ह्वाय जाई। यद्यपि याकर भविष्यप्रति हम्र निश्चिन्त बाटी तफे साहित्य के अभाव आर्थिक दुरावस्था से यहि कत्रा दूर सम डोरेना हो हम्र कह नै सेक्ति। जस्त और प्रगतिशील पत्रिका के आदि व अन्त्य सांग हुइलन, सम्भव वा वह रोगले यहिह फे ग्रस्त नै पारल हुहिस। तफे हम्र हौसला बध्द बाति कि हमार प्रकासन भित्तर स्थाइत्व हुई पर्थो कैक। इ सम्पूर्ण बात हम्र अप्न हुकनक जिम्मा म छोथिं यदि याकर भविस्य उज्योल देखना चाहथि कलसे इ प्रकासन ह आपन भित्तर आत्मसात कराई। हम्र गरिब अवस्य बाटि लेकिन गरिबि पना से हतासहोक भागनै चहथि। वह कारण से हम्र आसावादि अप्न हुकन्के सहयोग के फे हम्र आसा रथि। सम्पूर्ण सहयोगि गोचालिहुक्र जे याकर प्रकासनम सहयोग पुगैलि, आर्थिक, मानसिक दुनु स्थितिले इ प्रकासन अप्नहुकन कृतज्ञता ज्ञापन करथ व साग्रह अनुरोध फे करथ कि हमार कम्जोरिसे रहगैल गल्तिन्ह सच्याक पढ देहि व आगामि प्रकासनके लाग आकुर बढता रूपम सहयोग कै देहिकैक। पाठक बृन्द नया वर्सके सुभ-कामना सहित आगामि प्रकासनसम बिदा.........।

जय गोचालि परिवार

गोचाली तुहु व मैं

झर्मल गोचाली (दाङ)

गरिब होक बाचल बाटी हम्र
मेहनतके कमाहीसे लव्दाइल हम्र,
हमार आँस व पस्नाकें इतिहासले छुट्याइल हम्र
नै हो हमार कमैना डगरें,
नै हो हमार पुर्खन्के मेहनत व पस्नाले
निर्माण कलंक इतिहासके बाचल गाथा,
के कँदे ह्वाइट हाउस हम्रहे बनैलो कैक ?
के कँदे ताजमहल म हमार आस व पस्ना छिटल बात कैक ?
के कँदे सिंह दरबार भित्तर चिठल झोप्रिह साहांस बिह्वारल वा कैक ?
हम्र त खाली निर्माण करुइया केल हुईं,
लेकिन और जनहुक लाग हो,
हम्र त जुग भित्रक ककून्याइल हुइती
हम्र त पस्ना बहुइया केल हुईं,
लेकिन उपयोग और जनक हुइना हो।
इत शोषण व दमनके सतावाम थिचल
हमार युगके कहानी हो
सद्द कैक फेन छुछ्छाइल हम्र
हमार युगके रुवाई हो,
तुहु, मैं, व हमार ऐना भविष्यके पिढिक
'गोचाली' गौरब व मार्ग दर्शक हो,
लेकिन 'गोचाली' हमार सक्कुनक हो वह बर्से
'गोचाली' तुन्हक व हमार बिचके सन्देश हो
'गोचाली' खेतिहार किसान व मजदूरन्के आवाज हों
'गोचाली' यथार्थ हो
'गोंचाली' आँजके युगबोध हो

(त) आदर्श व्यवहार कर्वी ते ।

(थ) और भाषाक अनुवाद थारु भाषामें कर्वीते ।

(द) वेश-भूषा रहन-सहन हे नै त्यग्वी वरू ओम्नेहें सुधार कर्वी ते ।

(क) जनता तर-तिउहार, पूजा-आजा, पर-पहुना अइथ ते, जाड़-मद नै होकेनँ चलथ। जाड़-मद करे ढेर जुन अनाज पानी के बहुत नोक्सान हुइथ जौनकि १० दिनके एकदिनमें ओरा जाइथ। यहे ओर्से बेहद जाड़, मद बनैना-खैना समाजमें दोषबा व संस्कृति के उत्थानमें बाधा बा।

(ख) हमार समाजमें जनसंख्या के बृद्धि हाली-हाली हुईथ। बहुतसे हम्रे बातीं, सन्तान हुइती-हुइतीफेन इच्छाके तृप्तीक लाग दुई-तिन परिवार बढा लेथी जौन आगे भारी झमेलामें परजाइथ। बाल-बच्चा ढेर हुइलक ओर्से मज्जासे शिक्षा देहेनै सेक्थी औ जीवन भर घर परिवारहे सम्भर्ती-सम्भर्ती दिन बित जाइथ। संस्कृतिके ओर कल्पना कैना बिल्कुल मौका नै पैथी। यहे वर्से भोग-विलास हमार संस्कृतिक उत्थानमें बाधाबा।

(ग) अशिक्षित, डरपोक हुइना हमार परम्परा होगैल बा। हमार समाज अन्धार दुनियामें भूललबा। यहे कारण आँज हम्रे संसारके मनैन से बहुत पाछे बती। आपन जिन्दरवनसे कुंचवा-मिचवा पैती बती। का कहूँ जेकरमें शिक्षानै हो कुचल-मिचल बा, ओइसीन मनै आपन संस्कृति ह बैचना कब का सोची ? ओकर जीन्दगी तें आनक चाकर में ओरा जाई।

हमार समाजफेन असहे बा। जिम्दरवाके हाथेमें हमार जीन्दगी ओरैती बा। एहेकारण आपन समाज हे बढता से बढता पढाइ ओर सहुलियत (होसला) देहक परलबा। काकरे कि अशिक्षा हमार समाजके लाग श्राप बा। शिक्षा बिना हमार संस्कृतिक बचाऊ हुइकना सीलसे हिमालय पहाड़ बन्ना जैसिन नहकक हो।

(घ) हमार समाजमें विना कामक पूजा-आजाक बहुत चलन बा, जौनकि हमार संस्कृतिमें बहुत भारी बेधवा वक्के रहल बा। जस्ते आपन लड़कनन पहिले—पहिले पढे लगाईबेर पूजा पूजना, टोकटो टोकटा कैना, घोर लदाई पूजा, भोजकराई, पिटोरनोया, साध-पुजा, अटराई पुजा, मात मनौता- पुजा, पुट बुझाइ, घुरल्ली-घुरल्ला, पेड़िया पुजा, ओली कैना, असहे असहें आत्तर बहुत से पूजा बा, जिही से न कुछ मिलथ, न कुछ हमार आजा-पुर्खन् के न सम्झना न श्रद्धा-भक्ति झलकथ। खालि जंजाल

किल रहथ। यी पूजा कइलेसे विना कानक खर्च सिवाय लाभ नै हो। अइसिन-अइसिनमें न खाइल हस लागे न पियल हस लागे, खाली खर्च किल। यहेकारण ऐसिन-२ पूजा हे हटा देना आपन संस्कृति बचाऊ कइना हो।

(ङ) अन्ध विश्वास संस्कृतिक पतन के सहयोगी हो। जस्ते भुत-सुत के बात बतवाके गाव घरके बोक्सा बोक्सीन्या कैक' देवती-देवता हे पूजी -पुजा कइना।

देवता भुंसियइले से दुःख मिलथ कना, धेर पढ़लेसे बौरा जइना, गुरइ-पाती वइथके रोगी-भोगी चोंजइना अन्ध-विश्वासमें गने सेकजाइथ। जौन हमार समाजमें छांइल बा। हमार परम्परागत अइलककारण से भावी-सन्तान् हे यी रोग छोड़ी कन मंही नै लागल हो, जबकि यी रोग हे छुटइना कोशिश नै करब ते। येहे रोग लाग के हमार संस्कृतिक उत्थान्में बाधा बा। येकर दोसुर नाम अन्ज विश्वास हो।

(च) हमार जातमें बहुतसे बती लगभग सकुहुनके काम वोहे बा खेती। किसानी हमार जातसे मिल्लक काम (पेशा) हो कना जैसिन फेन मिलथ। पढ़ाइ-लिखाई ओर ध्यान विल्कुल नै देथा कलेसे फेन हुइथ। पढ़ाइक कमी, लिखाइक ढंग नै पुगलक ओरसे हमार संस्कृति दोसुर हुइती-हुइती फेन प्रकासमें नै आइ सेकल हो। वेन हमार संस्कृति विलइती जाइता, लोप, हुइती (बिसरती) जाइता। येहे कारण हम्रे खाली किसानीके किल उददीम नै कैके थोर थार यानी किसानीके साथ-साथ आवर में फेन लगना हो, जौ कि जिहीसे हमार चौमुखी विकास हुइती जाई।

(छ) सामाजिक विकास संस्कृतिक उपर बा। जस्ते-जस्ते संस्कृतिक उन्नति हुइती जाइ, ओस्ते-ओस्ते समाजके उन्नति हुइ। संस्कृतिक विकास औ रक्षा भाषा करथ। भाषा विना न संस्कृतिक विकास मानल जाइ, न समाजके। पशु-समाजमें भाषाके अभावसे पशु-समाजके विकास हुइना कल्पना (सोंचे) तक नै करे सेक जाइथ न संस्कृतिक जनन। आज हम्रे फेन हमार आपन भाषा हुइती-हुइती फेन पशु-समाज हे छुए-छुए करती। अब हम्रे आपन भाषासे संस्कृतिक रक्षा (बचाऊ) करी। भाषा से प्रेम

कइनाके माने हो, अपने भाषा औ साहित्यके प्रचार कइना। जिहोंसे हमार संस्कृतिके बचाऊ बहुत मज्जासे हुइ सेको।

(ज) ‘ साहित्य समाजके ऐना हो’’ समाजके जानकारी साहित्यके ज्ञान् से हुइथ। एहे ओर से हम्रहीन् आपन् भाषा औ साहित्यके विका-सक लग समय समय, मौका-मौकामें साहित्य गोष्ठी कइना, भाषाके प्रचार कइलेसे संस्कृतिक के विकास करे सेक्थी।

(झ) थारु-समाजमे बहुतसे वाल-विवाह (छोटेमें भोज) के चलन बा। (छोट लड़का भारी वठिनिया) येहे कारणसे भारी-भारी परिवार एक घरमें रथ। बाल-विवाहसे न बौद्धीक विकास, न शारिरिक विकास हुइथ। छोटेमें झमेलामें फसलक ओरसे संस्कृतिक उत्पादन्में ध्यान देहे नै सेक्थी। येहे ओरसे छोटेमें भोज कइना आफ्न संस्कृतिक ओर ध्यान नै देना हो।

(ञ) कौनो समाजके वारेमें जानकारी कइना साधन वोहे भाषामें पत्र पत्रिका निकरना फेन एकथो हो। संस्कृत तथा साहित्यके जलन पत्र-पत्रिकासे हुइथ। येहे कारण थारु-भाषामें पत्र-पत्रिका निकरना व्यवस्था कइना संस्कृत तथा थारु साहित्यके वचाऊ कइना हो।

(ट) जीमदरवनके शोषण-दमन थारु-समाज हे डरपोंक गरीब-दुखी, अशिक्षित, विद्याहीन, सहासहीन बना देले बा। अथवा थारु-समाज शोशित-समाज हो। जब तक थारु-समाज शोषण-दोहनसे नै बची, तब तक हम्रे आपन संस्कृति ओर ध्यान नै देहे सेकवी। जीमदरवनके शोषण-दोहनसे बचना हमार संस्कृतिके बचाव कइना हो।

(ठ) कौनों काम करे बेर उ कइके छोरब कन पक्का विचार ओ विश्वास नै रही कलेसे उ काम आधे-न-काधे रह जाई। संसारके भारी-भारी मनै उ काम कइके छोरब कना विचार लेके आगे गइल, आखिरमें उ काम हे पूरा फेन कइल’ ओसहे, हम्रे फेन आपन भाषाके सुधार-प्रचार कइना पक्का विश्वास (व्रत) लेके आगे जैवी कलेसे भाषाके सुधार, संस्कृतिक विकास हुइ कना विश्वास निश्चित बा।

(ड) “प्रित न जाने रीत’’ कना कथा बिना मोह-मायासे कुछु नै हुइथ। बिना मोहके कइना वल-जबरी कइना जैसिन नाहक हो। जबर जस्ती कइके कतना दिन चली। जबर-जस्ती कइना धेर दिनके लागने

हो। चार दिनके चांदनी फेन अंधेरी रात कना जैसिन हो। एहेकारण संस्कृतिके विकास कइना सोचनासे आगे संस्कृतिमें मोह-माया सिखना जरूरी बा। संस्कृतिमें मोह-माया रखना हमार विकास हो।

(ढ) थारु-समाजके इतिहास महा-लम्बा बा। समाजके फुरे-बात् इतिहाससे मिलथ। विना थारु इतिहासके जानकारीसे आज-कलके थारु-समाजके वारेमें जानकारी मिलि कना मही नै लागथो। थारु संस्कृतिके फुरे बात जानक तन थारु-इतिहासके खोज कइना जरूरी बा।

(ण) लेख—प्रतियोगात्मक हुइना चाही। जिहो से लेखकन् हे लिखना हौस लगहीन् ते संस्कृति के विकास हाल-हाली हुइ।

(त) खुद हम्रहीन समाज से आदर्श ब्यवहार कइना चाही। आदर्श में संस्कृति नुकल रहथ।

(थ) अवरे भाषाक अनुवाद थारु भाषा में कइले से फेन थारु-संस्कृति के विकास हुइ सेकथ। यीहीसे आगे कही सेकल बा कि साहित्य में समाज के चरित्र चित्रण कइल रहथ। ये हे कारण दोसुर जनहन के संस्कृति दोसुर भाषा के अध्ययन से करे सेकथी बढ़ल-चढ़ल संस्कृति के प्रेरणा से आपन संस्कृति हे फेन बढ़ाइ-चढ़ाई सेकथी। विकसीत संस्कृति के कब, कैसिक, ओ काकरे संसार में ई (उच्च) स्थान पइले बा कना फुरे बात जान के हम्रे फेन ओसहे करब ते निश्चित् बा कि हमार संस्कृति वोसहे ठाऊ पाई। ये हे कारण अवरे भाषाक अनुवाद थारु-भाषा में कइना संस्कृति के विकास हो।

(द) वेश भूषा, रहन-सहन हे नै छोरवी बेन ओम्नेहे सुधार करे जावी ते हमार संस्कृति आगे बढ़ती जाई पतन नै हुई। इतिहास के खोज में सजिल फेन रही। येहे कारण संस्कृति के वचाव सुधार से हो सेकी, त्यगाई से नाही।

तब फेन हमार धन अतना धेवर समस्या हुइती र फेन आपन संस्कृति ओर ध्यान नैं देदी हम्रीहीन मनीक बहुत से बती, केऊ कथी थारु भाषा में लिखना नै आइथ, वेन अवर भाषा में लिखना आ जाइथ। केऊ कह थुइवी, थारु भाषा मे का धइल बा। थारु भाषा पढ़के लिखके का पइना बाजे। बहुत से हम्रे हुइवी आपन भाषा, संस्कृति के मोल नै जानके विल्कुल छोड़ देले हुइवी। हम्रीहीन से यहा तक सुनल जाइथ कि

थारु भाषा कहु भाषा हो। जहाँ तक आपन संस्कृति, भाषा हे [illegible] करलक हो।

वास्तव में कना हो कले से थारु भाषा औ संस्कृति संसार के [illegible] संस्कृति से कम नै हो। थारु संस्कृति के गुण देखके आज कल बहुत से विकसित देश फुरे वात पत्ता तगाइक तन कतना पैसा (धन) खर्च, करती बना कना ठीकान नै हो।

उदाहरण के लग इंग्लैन्ड, अमरिका मूख्य वा। अमरिका इंग्लैन्ड जैसिन विकसित देश के बड़े-बड़े विद्वान थारु संस्कृति के पत्ता लगाइक तन निकरल बतं। यिहि से पत्ता चलय कि थारु संस्कृति के संसार में महा महत्व बतीस्। अतना हुइती-हुइती फेन थारु-भाषा-संस्कृति संसार में विलाइल वा।

जौन हुइले से ते का हुइ जे आज कल के लौवा यूवक संङ्गसहेली थारु-भाषा-संस्कृति, साहित्यकेहेन दिने-दिने आगे बढ़ौती बत। थारु संस्कृति विकास करती जाइत बा। थारु सस्कृति के बचाव के लग थारु-कल्याण-कारिणी समिति" खुल-लबा। एकर अन्त रगत रहो के थारु भाषा औ साहित्य प्रचार समिति खुल्ल बा। अस्तक हमार परिश्रम (मेहनत) बढ़ती रही कल से थारु भाषा, साहित्य, औ संस्कृति के भविष्य विना संदेह के ओजरार बा।

दाङ् देऊखुरी छात्र मण्डल से प्रकाशित हुइना

"सन्देश"

अवश्य फेन पढना भुला देवि काकर कि ऊ फेन शोषित, उत्पीडित, गरीब ज्यामी, किसान के आवाज हो !

आह्वान

लेखक :—पीडित

आग बढो आगबढो आगबढना हो,
हम्र फेन मनै हुइति आग बढना हो ॥ १ ॥
सक्कु मनै आग गैल हम्र पाछ हुइलो,
आग बढो कामकरो नैत हम्र गैलो ॥ २ ॥
सक्कु मनै चतुर हुइल थारु गोंगा हुइलो,
हँना पिना पत्ता नै हो भुख हम्र मुलो ॥ ३ ॥
आग बढो जिन डराव लौसे ज्याज्या परी,
झिरि मुअल से लौसे हमन आब मर परी ॥ ४ ॥
हम्र किसान बहुत बाटी जिम्दार बाट दिन्चे,
हम्र मिल्लसेत भैयौ अप्नहे मनै बाट ॥ ५ ॥
हम्र बन्थी गोरु हेरो जोत्ति हिक्र बाट,
हम्र मिल्लसेत भैयौ भूख मनै बाट ॥ ६ ॥
गाऊँ भर हम्रबाटी ठग एक्थो जेक्ष,
धम्की देथा पिट दैत्या थुन्देस आब्ब कथा ॥ ७ ॥
चोरवा नै हुइ डाँका नै हुइ थुन्के काका करी,
लौसे थुनी सक्कु जहन कथ्याकसम पाली ॥ ८ ॥
हमार कमाइ द्वासर खैना भुख्ल हम्र मर्ना,
ओहिमफे बिना पुग्के कमारा अस बन्ना ॥ ९ ॥
थारु गोरु हिक्र कथ फुर हिक्र कथ,
कहदेव हेरो भैयौ कब्त पयाला .पर्थ ॥ १० ॥
हुफ्न फेन पढ दत्ली हमार बुद्धि आईता,
जे कमाई उह खाई ऐसिन जुग आइता ॥ ११ ॥
उठी जाओ चतुर बनो हमार जुग आइता,
पापी मनै सुस्त-सुस्त आव्त थाहाँ पाइत ॥ १२ ॥
कौनो मनै दुःख हमार नै छुटैही भैयो,
आपन बुद्धि बलसे हेरो धन्धा करो आओ ॥ १३ ॥
छोला भके बरा हुइना नेता बना चाहो कर्म,
गोंगा होके पाछ लक्थी मर्ना चाहो कर्म ॥ १४ ॥

चतुर कौवा-छल्लु गिदार

कौनो समयमा बारा बन्वम एकथोर चित्रा और एकथोर कौवा मित्वा मिलाकन बैठंत् । हुंक खौब मेलकैक बैठंत् । चित्रा रूख्वक तर ओर कौवा जुन्हुक रूख्वक डँरियम बैठ । चित्रा बड़ा सोझ दिलक रह । ऊ कौवा ज्या कलसे फेन करूइया तयार रह । ऊ बन्वमक घाँस पात खाकन आपन मनका बैठलक ओरसे खौब टूल्ह हुइल रह ।

एक दिनिक बात हो । चित्रा बन्वम घाँस चरतह और यहोर ओंहोर घुमतह । दुरहिसे एकथोर गिदरा ऊ चित्रहन देखल । ऊ चित्रहन देख्तिकी आपन योजना सोच दारल । ऊ मनमन सोचल, "यदि यी चित्रहन मुवाय पैलसे, खौब मोट-मोट शिकार खाए मिल्नेरह" । मुले चित्रा एकदम भारी और गिदरा एकदम छोटी हुइलक ओरसे उहिहन मर्ना हिम्मत नै पलिस यदि ऊ मार जाइत् कलसे चित्रा एक सिंह झम्काक मार दिहुइया रह । ऐसिन असम्भव हुइलक ओरसे पहिल गिदरा चित्रसे मित्वा मिलैना विचार करल ।

दिनक ठारह दुपहर । चित्रा आपन मनपरल बड़ा-बड़ा घाँस भेटाकन चरतह । ऊ समयम गिदरा चित्रक लग्न जाकन कहल, "राम राम हो दादु" चित्रा फेन आपन दृष्टि गिदरक ओर लगाइल और जबाफ देहल, "राम राम भैया" ।

गिदरा—तुहार हाल चाल आज काल्ह कैसिनबात दादु" ?

चित्रा—"चिकन चिकन बातु हेर भैया" ।

गिदरा—"तुं आज काल्ह कहाँ रथो" ?

चित्रा —"तैं के हुइते और कहाँ से ऐले ?"

गिदरा —"मैं गिदरा हुइतु, मोर यी संसारम और कुइनइ हुइत । मैं असेहँक घुमल करथुँ" गिदरा कहति गैलस, "मै दादु से मित मिरैना चाहतु" । अत्रा सुन्तिकि चित्रा सोझ मनक रहलक ओरसे ऊ फेन आपन संग ऐना मनकैधारल । संझ्याक गिदरा, चित्रा ओ कौवा रहँत् । कौवा गिदरा हन देखक चित्रसे पुछल "ए ! चित्रा दादु अपनक संग के आरहल

चित्रा—"याकर कुइनइ हुइतिस्, ओ हमार यी फेन संग बैठनुँ कहिक आरहल"।

कौवा—"हत्त रि ! कब्नुनै चिन्हल सघरिया फेन तुँह काकर नन्लो ।

चतुर गिदरा ओठेँ बैठक सककु बात सुन्तिरह । ऊ झोक्याक कहल, "तुह फेन त एक दिन असेहक बिना चिन्हल रहल हुइत्रो । बहुत दिन संग-संग रहत-रहत पो आज असिन चिन्हल जानल हुइल बातो । मैफेन असेहेक आज से रहमत चिन्हल जानल होजैबु" । कौवा विचारा पंछिक जात काकर, अत्रां सुनलत मनमन कइल, "तुहर जानो मोर काहुइ" कहिक चुपारहल आब चित्रा, गिदरा ओर कौवा रोज्ज दिन एक ठाउँम बैठलगल ।

दिन वितत् गैलस् । गिदरा ओ चित्रा रोज दिन घाँस खोज बन्वम एक संग जाए भिरला एक दिन गिदरा चित्रहन कहल "चित्रा दादु हो । मैं एकथोर खेत्वा देखल बातुँ, जेहिम बाली खोव मजासे फरल बात ।" चित्रा ओकर बात मान्दरल । दुनु जान ओह खेत्वा ओर चलदेल । चित्रा पाकल बाली खाकन खोब मजासे अघाइल । एक दिन खाइल त ऊ परच गैलस् । असेहँ कन, हुक्र दुनु जान रोज ओह खेत्वम बाली खाए लगल ।

एक दिन अखोरिया चित्रा हन देखल । ऊ मनमन सोचल, "यदि यी चित्राहन मार पैलसेत कसिन मिठ शिकार खाए मिल्ने रह । "अत्रा कहिक ऊ और दिन खाभर लगाइल । चित्रा बाली खाए गइल, गिदरा फेन संग रह । चित्रा खभ्रम बाझगैलस् ओ लटपटाक गिरपरल । आब ऊ आपन संघरिया गिदरा से प्रार्थना कर लागल कि उहि छुटाव कहिक ।

चित्रा—"अर गिदरा भैया । आपन दाँत लेक यी जालहन काटक महिहन छुटा" । मुले यहोर गिदरा आपन योजना बनाइतह ।

गिदरा—(मनमन) चित्रहन अखोरिया मारी कलसे हाड़वाड़ त अवश्य बगाई । ओत्र लेक फेकी तम्वार तीन चार महिनक सामा हो जाई ।" अत्रा सोचक ।

गिदरा—"आज अतवार हो, मैं अतवारीक वरत बैठ्ठूँ ओ जाल जुन्हुँक सुरिक नसक बिनल बात । ओहमार मैं यी खाभर कटनाम असमर्थ बातुँ ।"

आब चित्रहन आफत् लगलिस् । ओकर सहारा करूइया कुइनै ठह-रल । गिदरा ठोरीक दुर जाक दपक गैल ।

यहोर कौवाहन छटपटी परलिस् कि चित्रा आम्हिन लाग फेन ऊ डेरा पर्ना रूख्वे नै पुगऊ कहिक ऊ चित्रक खोजिकर चल देहल ।

आखिरम ऊ चित्रहन एकथोर खभ्रम वाढाल देउल ।

कौवा—"देखलो दादु ! अखि गिदराक बलाकी । मैं त [illegible] देन्हुँ कि बिना चिन्हल संघरियाक पाछ ना लागो । "आव फेन [illegible] ।

अत्रा सुनलत चित्रा बड़ा जोर से लजाइल । काकरकि यो काम [illegible] से गल्ति हुइलहिस् । दोस्र कौवा आपन सल्लाह देहल ।

कौवा—"दादु हो ! आव यहीम तुँहार बचना एकथोर उपाय बात मोर कलक बात मन्वो त मै बताऊँ ।"

चित्रा—"चाहे जैसिक हुइलसे फेन महि बचैना कोशिष करो । मैं त बात मनुइया तयार बातुँ यदि मोर ज्यान बचा देबो कलसे ।"

कौवा—"अखोरिया तुहिन खभ्रमसे छुटाए आई तब तुँहू मरल असक हो जैहो । तब ऊ खभ्रमसे छुटा दारी । मैं मौका हेरक बोलम् । मोर बोल सुन्तिकि तुहँ उठक बेर पद्या भग हो"

चित्रा—"ल्यौ ल्यो मैं तयार बातुँ ।"

आब कौवा ओठेहे उपर रूख्वम बैठल बात गिदरा ओठेहें दपकल बात औ चित्रा जुन्हुँक खभ्रम बाझक धन्मनाइल बात । तीन्यों जान ओठेहें बात ।

अखोरिया दुरहीसे चित्रहन धन्मनाइल देखक बड़ा खुशि हुइलस् । ऊ ओटे जाक चित्रक सिह पकरक हिलाइल त ठेत्कार-ठेत्कार भेंटाइल । काकर कि चित्रा कौवक बात मन्ल रह । अखोरिया चित्रहन मारक लाग बड़ा भारी मुङ्गुर लैगैलरह । चित्रहन मरल बात कहिक ऊ मुङ्गुर-सुङ्गुर भुइयम धरल ओ चित्रक आँगमसे खाभर छुटाय लागल । खाभर छुटाक बिहोर लागल । तसहू कौवा बोलबो करल कि चित्रा उठक भागल अखोरिया उठाइल मुङ्गुर चित्रहन मारक लाग । चित्रक पाछ मुग्दुर लब्दाइल । गिदरा ओहरीय दपकल रह । चित्रहन झुक्क मुङ्गुर जाक गिदरक स लागल गिदरा मर गैलस् ओ चित्रा भाग देहल । कौवाफेन पाछ काव-काव कर्ति उड़क गैलस् । अखोरिया पसताक रहि गैलस् ।

द्वारा
फुलराम चौधरी
जोन्हापुर, कैलाली
(पश्चिम नेपाल)

धर्तीके सपुत गोचाली के प्रती

कुलबीर चौधरी रावत गाँऊ

* * * *

ए ! म्वार धर्तीके सपुत गोचाली हुक्र
काम करत-करत हाथ तुन्हक खियागैल
न्याङ्गत-न्याङ्गत ग्वारा तुन्हक घिस गैल
रूइत-रूइत जुनि तुन्हक वितगैल
मै जरूर दयाख्तु, तुहू बार्ता इरकरल
तुन्हक आँस ले महासागर भरता
तुन्हक पस्नाले तल्वा भरता
तुन्हक जाङ्गरले नै भर्यो खोल्टी फेन
तुन्हक कमाहीले नै भर्यो प्याट फेन
ए ! म्वार गोचाली हुक्र आपन दुखक बात कहो
आपन इ छिया-छिया हुइल मोंदुह
खोल्क देखाव दुनियाह
आब रुइना समय नै हो
हस्ना फे आइता
पुरान जमाना गैल
नया जमाना आइता

इ जमाना पैना नैहो कौनो भगवानसे
इ त लेन्ना हो हम्र सब्ज मिल्क
काधम काध मिलाक
शोपकन्से लर्क

शिक्षाके दिया बार्क
ऐनाहो खाली संघर्ष कैक
डराक नही
बल्कि शहिद बन्क
नै बनि आव हम्र गोरु बन्क
आँज ज्वाति गोरु
पाछ जोतही हमन
आँज खाइती भात
पाछ खैबी घास
आव भैयो मिली छुटाई इ जमानाह
एक्क स्वर एक्क जुट होक जगाई इ दुनियाह।

सर्वहारा साहित्य आपन बर्ग व औरगरीब वर्गन मुक्त पर्ना (छुटकारा दिलैना) आन्दोलन के एक भाग हो।

—ल्यू-स्यून

किसानके एक ऐतिहासिक झलक

(दाङ्ग से बुढ़ान)

सगुन लाल चौधरी 'साहसी' दाङ

❀

कौनो फेन दुई चिज ठक्कर खैथा कल से उहिमसे कौनो दोस्रा चिजके सृष्टी हुई था। जसिन की काठ-काठम जुझा देलसे आगी बन्था; पथ्रा जुझलसे फेन आगी निक्रथा और अस्तहँके पानी और आगी जूझलसे बाफ निक्रथा। उह ओसें हरेक चिजके जुझाई हन कथ की संघर्ष। चाहे जसिन फेन दुई चिजके बिच लड़ाई हुई था कलसे दोस्रा चिज निक्रथा ई सहिबात हो। हम्र कह सेक्थी की ई का मतलब से बन्था त? वास्तव म कलाहो कलसे ई प्रकृति के नियम हो। प्रकृति के चलन ईह बात। बिना असिन हुईल प्रगती फेन नै हुई स्याकत। संसार म उन्नती व हानी बिना संघर्ष कब्बु नै हुई स्याकी।

संसारम बिभिन्न किसिमके प्राणी मध्ये मनै एक सबसे जन्ना-सुन्ना प्राणी हो। ई प्राणीक साम्ने त झन अनेक किसिमके अदल-बदल हुईना स्वाभाविक फेन हो। सककु जान कथ की मनै एक चेतनसिल प्राणी हो। उह ओसें याकर आवश्यक्ता दिन पर दिन बढ़ती जैथस। आपन आवश्यक्ताके पूर्ति के लाग ई फेन अनेक संघर्ष करथा। आपन अधिकार बचाव करक लाग ई बहुत कोसिस करथा लेकिन हार जैथा तब त एक दोसर जहुन याने कम्जोर हन आपन बसमे कै लेथा। ई हो मनैनके प्रवृती।

थारूनके बिषयम जन्नासे पहिल हम्र मनैनके ईतिहास जन्ना जरुरी परल बात। उह ओसें संसारके सृष्टी औ प्रगती कसिके हुईल मजासे बुझ दारी। मनैनके इतिहास याने वतकोही बहुत लम्मा बात। तर हम्र आज पहिल छोटी-मोटी बत्कोही जानी और काल फेन बहुतसे बहुत जान

परी।—आजसे बहुत बर्ष पहिले मनै जंगलम बैठके जंगली जनावर जसित रलह। सक्वाक बोक्ला खैना अथवा फल फूल खैना और दोन्द्रम रहना करत। उह ओर्से ई जुग हन जंगली जुग फेन कथ। दोहा मनै कर्ति-कर्ति पशु याने जेही हन आपन बसम लान सेकना, पल्ल रहना और मारा खैना काम करत। जसिनकी आज हम्र गोरू भैंस पालके काम लेवी, तर पहिल खाली खैना हिसाबले केल पल्ल रहँत। ई युग हन कथ पशु पालन जुग। मनैनके दिमाग परिवर्तन सिल रहलक ओर्से हुँक्र एक्क किसिमके नै रह स्यकत। समय फोर्ती गैल। हुँक्र देख्लकी पशुके मलम बहुत झारजगल पहलाईल तब जत्रा फेन लाभ दायक याने खैलसे फाईदा हुईना फल्ल हो, उहीमन अनाज बुई दँतल। मजासे हेर विचार फेन कर लगल। असिनकर्ति-कर्ति खेती कर लाग गैल। उह ओर्से ई युगहन कृषी जुग कह भीरल।

आब मनै चारो ओर घुम छोडके एक ठाऊँ बैठ लगल दोन्द्रमसे निकरके झोंप्री-झोंप्रा बनाई लगल। और सुस्त-सुस्त सभ्यता याने मजा रिती रिवाज सिख लगल। खेत-बारी म्वार हो व त्वार हो कहना भावना फेन जागल। उह ओर्से मने शक्ति शाली गुट बनाके रहना चलन सिख भिरल। ई समय रह मनैन हन आपन बचाव करक लाग भारी गुट बनैना व समाजम बाँच सेक्नां कारकि बडा गुट वालेन छोटी गुट हन असिन बना दिहन की हुकनके कुछ अधिकार नै रहन। ठीक उह-समयसे सम्झौता करना चलन बनल याने आपसम मिला पत्र कर लगल और एक जहन गाऊके महँतावा, अगहवा, बरघरिया, मुख्या कतवाल, आजके प्रधान जसिन छानके ओकर कहल अनुसार मन्ना सर्त याने नियम बनैल।

पहिल सब जनता लागके एक जहन अगहवा छानत तर पाछ उ आपन शक्ति बढाके सब किसानन हन आपन बसमें पार दारल। अगर कुई नै मन्लसें ओही हन कब्जा करकते फौज बना धारल। आपन गाऊके याने पहिल एक गाऊ के झगडा मिलायत पाछ दश गाऊके रजौता बनौल। कर्ति-कर्ति सब जहन जबर जस्ती मार पोटके आपन हातन लान लागल। जनता गंजा हो गैल। आपस में नै मिलके एक मनैन के हातम सारा अधिकार दे दरल और मनै आपसम झगडा

कर लगल। वाकर नाफा एकक मनै खाके उ बनल जिम्दरवा हुँक्र बन्ल किसनवा। आज उह फल हो; उह कारण हो, उह ओर्से हुँक्र जिम्दरवा हम्र किसनवाँ; हुकनक जन्नी ठकुरन्या; हमार जन्नी कमलरन्या; हुकनक छावा हजुर, हमार छावा मजदुर,हुँक्र धनी, हम्र गरीब, हुँक्र बैठल बात महलम हम्र जन टुटल झोंप्री म हुँक्र सेव बढिया, हम्र जुन दरिया—और कत्रा बयान कर्ना हो। आज हम्र बुझ पर्ना बहुत जरुरी बात की हमार परिस्थिति कसिन बात और कसिक हुईल हो कैक। हमार रात दिनके पसिना कहाँ बात औ का बनल बाती? आजके सामन्ती दुनियां म खौब बिचार करी जत्रा बाती हम्र सब किसान एक जुठ होके बदला ली जत्रा बात हमार सब नुकल शत्रुनसे। हमार समस्या और कुई फेन नै हेरी और कुई नै बनाई हमन; हम्र आपन अधिकार लिहक लाग हात जोरके हजुर कैके नै पाई स्यकबी बल्की एक जुट होके हात उठाके जबरजस्तो लीह स्याक पर्ना बात।

नेपालके मूख्य किसान जाती मध्ये थारू के घना बस्ती बात। उह ओर्से थारूनके इतिहास जन्ना हमार साम्ने जरूरी काम निकर गैल बात। हुईना त मजा बिचार हुईल मनै कथकी संसार म याने दुनिया म जत्रा मनै बाती उ मध्ये केवल दुई बाती—थारू (पुरुष) व जन्नी (महिला) तर आजसे पहिल जन्तनके बिचम फुट पारक लाग; फताहा मनै लुटक लाग व बलगर गुट हन टुर-फार पारक लाग मनैन कैयों जात मन बाँत देल रहल। नैत कनाहो कलसे मनै-मनै सब जत्रा के शरीर मन खुन भरल बात और बराबर शरीर के बनावट फेन बात। दोसा बात रहल धर्म—भगवान, भूत्वा, देऊँता और देवी मन्ना चलन फेन ईह मानव समाज म चलल रिति रिवाज हो। तर ई चलन आज नै शुरु हुईल हो बल्की करौंडौं बर्ष याने मानव चेतन सिल हुईल समय से ई चिज फेन शुरु हो गैल। ईह धर्म हो जो मनैन हन आपस² मन फूट-फाट पारक छोरल बात। और जाति-पाती, निच उँच के भावना जगा दिहल बात। हम्र हेरी त पैगी की ई चिज सामन्ती— फटाहान के बंन्ना एक आधार बनैलक हो जब मनै घर बनाके खेती पाती ह्वार लगल तबसे, देऊंता, भूत्वा, भगवानके चल्ती चलल। ई समय से पहिल समाजम असिन नै रह। ओस्तेहुँक की दिन जोन्या, हावा, पानी व धर्ति हन हम्र भगवान मन्थी; ई काकर

मन्थी और पहिल मनै कसिक मान भोंरल कलसे ई सब चिज लागके लाग कुछ फाईदा ओ नोकसान करलक ओर्से।

सूर्य याने दिन हन, हम्र पूजा कर्थी और चन्द्र हन फेन तर काकर मन्थी कलसे दिन हमन घाम दिहत और चन्द्र हम्रहीन रातके अंजार देथा। हावा बिना हमार कौनो काम नै चलत। हावा नै हुईलसे हम्र सांस फ्यार नै स्यकती और पानी बिना फेन हमार गुजार नै चलत। उह ओर्से हम्रहिन सब चिज हन लाभ कर्ना ओर्से पूजा कर्थी तर देऊँताके रुपम या भगवानके नाम देना गलत विचार हो। हम्र मान पर्था कि ई सब चिज प्रकृतीके आधार से बनल हो कैक। प्रकृती माने कौनो फेन अप्न बनलक चिज हो। रामभगवान मानके स्वर्ग मिल्था कना बिचार क्षन गलत हो। ई त एक कल्पना हो। राम नाम लिखकन एकथो लेखक कल्पना करल औ राम हन शक्तिशाली बना दिहल दोसर ओर रावण हन दुष्ट बना दिहल। मतलब का हो कलसे मजा मनैनके प्रतिनिधि राम बना दिहल और खराब नितिके प्रतिनिधि रावण हन बना दीहल। थौन्यार ठाऊ हन स्वर्ग और भैजा ठाऊ हन नर्क कथ कैके मान्यता जना दिहल। तर हम्र जान पर्थी की नर्क ओ स्वर्ग कौनो दोस्रा ठाऊम नै हो बल्की इह संसारम बात कैक। जहाँ सामन्ती साम्राज्य बादी, पूँजीबादी, उपनिवेशबादी, बिस्तारबादी शोषक याने जनतनके शत्रु नष्ट होगैल बात, उह ठाऊ होख स्वर्ग, जहाँ बहुत अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार औ शोषकके उल्मूलन नै हुईल हो, उह ठाऊ हो नर्क। माटीक भूत पूजके सुख कब्बु नै मिल स्याकत। ई त खास सामन्ती प्रबृती हो और फताहानके चलाईल चलन हो। काकर असिन चलन चलैल त एक जुट हुईना जनतन हन भूलाईक लाग। ऐसिन नै कलसे त जनता याने गरीब बर्ग धनीबर्ग हन पाप धर्म व स्वर्ग नर्कके कुछ वास्ता नै कै के आपन पसिना कुही शोषणकर नै दिहुईया हुईल। उह कारनले आज हमार समाज बहुत शोषीत हुईल बात।

कौनो फेन समाजम कुछ संघर्ष हुईथा कलसे-दुई बर्गके बिचम-शोषित व शोषक। ई दुई बगालके बिचम कब्बु फेन सल्ला नै बनती न काकरको शोषक याने धनि बगाल हो। धनि बगाल हर समय गरीबहन चुस्ना काम करथा। गरीब बगाल हर समय, रात-दिन श्रम करथा तर ओकर

पसिना मुट्ठीभर धनि वर्ग लुट लेथा। उह ओर्से शोषण करुईया जमिन्दार बहुत धनि रथ दोस्रा ओर गरीब हुँक याने किसान बगाल आपन कमाही खाए नै पाके अर्थात चुस्वा पैलक ओर्स टुटल झोंप्री मन बैठल बात जब की धनिन भारी घर बनाए स्यकथ तर भाग्य बादके नारा लगाके अन्ध विश्वास फैलाके जनतन अल्भलैना-जुक्ति फन सामन्तोन कर्लं रथ। ईह रोग आज हमार दंगाली थारू कीसान उपर फेन फ्याला पार स्याकल बात। आजसे चार-पाँच वर्ष पहिलसे हमार दाङ्गके कीसान अन्गीन्ती संख्या लेक बसाई सर्ल ई का मतलबसे हुईल, ई कसिके हुईल याकर बिषय म हम्र जन्ना-बुझ्ना कब्बु कोसीस कर्ल बातीत? सही कारण कहाँ व कसिक हुईल हो? तर वास्तव म कना हो कलसे ई चिज फेन हमार साम्ने एकथो जरूरी प्रश्न हो गैल बात। हुईनात ई चिज पहिल फेन रहल होखी तर भयंकर रूप मन आज हमार साम्ने मन एकथो समस्या खडा होगैल बात। अगर आसिन समस्या के बिषयम हम्र कुछ कह नै स्यकबी कलसे भबिस्यम और नै मजा रूप लीह स्याकी।

थारु जाति हर समय थाह्रे काम कर्ना हुईल ओर्से थारू जाति नाम परल हो और आजफेन ई जात हरेक काम स्वाझ याने थाह्र कर्थं। उह ओर्से आब फेन अप्न गैल, बुहान देश कैक फेन कौनो सामन्ती बिचार हुईल मनै कथ तर वास्तव म कनाहो कलसे दाङ्गके थारू किसान, सामन्ती जिम्दारनसे सतावा पाके बसाई सरलक हुईत कना चिज हम्र बुझ स्याक पर्ना बात।

२१ साल से दाङ्गम भूमी सुधार लागु हुईल। मोहीयानीहक सुरक्षीत रहना और जग्गाधनिनके साम्ने फेन हद बन्दीके नियम खडा हुईल। तर किसान के साम्ने इस जटील समस्या निक्ल। वढी जमिन याने हद से उपर जमिन विक्री हुई लागल तर उ जमिन मध्यम वर्गिय और दोस्रा ठाऊँके याने प्यूठान, सल्यान, रुकूम, रोल्पाके धनि वर्ग हुँक केल जमिन खरेदल आब दाङ्के एक किसान दशथोर जग्गा धनिनहन आपन श्रमले पल्ना हुईल जबकी पहिल एकक जमिन्दार हन पालत तह। गरीब किसाननके हाथम कब्बु फेन पैसा नै रहत ई सबजे जानल बात हो। मोही हक के कुछ मान्यता नै रहल। सर्त म अदल-बदल हुईल। पोताहा, पचकुर के ठाऊँम अध्या तोन कुर कैके जमिन्दार हुँक बाली रोक्ना कर लगल

और जबर जस्तो अच्या मन सही कराय लगल सोझा कीसानन हुन बल्की कीसान हुँक्र आपन सहि अधिकार लोहक लाग अनेक मूल मन लडल तर कुछु सीप नै लगलीन् । उदाहरणके लाग दाङ्ग सुकवार मन हम्र आँखी साम्ने फेन देख्ली की एक सरकारी कर्मचारी जाके फेन किसान उपर लाठी चार्ज कैक तीनकुर मन हस्ताक्षर कराईल जबर जस्ती कलसे कब दाङ्के थारू कीसान के भलाई हुई स्याकी । का अपने देख रख्ली कबु सरकारी मनै किसानके मुद्दा जितैल्क ? सरकार किसानके भलाई करकलाग कबु मजा काम कैराखलत अथवा हमार कीसान जगा पैल बात त वा कहोंरे वा कौनो गाऊक कोसान कुछ लाभ भेटल बात त ? नहीं कुछ नहीं याकर बदला लुट मार सहल बात आज हमार सब कीसान केवल दाङ्ग के केल नही बल्की सारा ठाऊँ के । अस्तहँ हम्र सयों गाउके उदाहरण पैथी जहाँ किसानके अधीकार जबरजस्ती हनन कैल बात । कोसान हुँक्र लगाइल जमिन फेन कष्टके आपन घर खेती कैक दु:ख दीह लगल कीसानन हुन । ठीक २०२२ साल से दाङ्गम बचत उठल और सुखा फेन कर लागल । बतैया से फेन कीसाननके जत्रा बँचल अन्न घरम रह नै पाके धर्म भकारी मन जैना होगैल तर कीसानन् मूख्य वाली दोलैना कागत भूमी सुधारसे गाऊ पंचायत घर सम्म फेल पुगल नकी हरेक कीसाननके समस्या ह्यारल । हरेक कीसानन मूख्य बाली खैना बन्दो बस्त कब्बु नैं हुई स्याकल । कीसान सींचल की हमार पैना चिज भर नै देना, और जहन हमारथेसे दिलाईक लाग भर घरम से जबर जस्ती खोजके सर्बस्व कै के लैजैना । ई त-बहुत अन्याय हुईल कना असर हमार थारु—कीसान उपर पर गैल । हुई हुईना त कौनो फताहान कथ की थारू जात गोरू, भैंस पल्ना, जंगल के नजिक रहना, उह ओसें कैलाली कन्चनपुर बाँके, बर्दिया गैलक हुईत कैक । तर कना हो कलसे कौनो फेन मनैन आपन जन्मलक ठाऊँ से प्रेम रथा । थारू कोसाने फेन आपन जर्मलक ठाऊँ छोरके जाए बेर कथकी :—

ईहरी ! अँगनवाँम खेलली व हँसली रेहाँ !
ईहरी । अँगनवाँ छोरती मैयाँ लाग ।

एकथो थारु कीसान आपन जन्म भूमीसे कत्रा गहींर प्रेम रख्या कना वात हम्र ईहाँ जान सेकली । तर आज कीसानके समस्या अत्रा

भारी रुप लेले खडा हुई तात ज्याकर लाग कुई फेन सहायता करना तैयार नै हुईथो । हुईना त कीसान हुँक्र बुझ पर्ना हों की कुकुर व बीलार के सल्ला कब्बु नै वन स्याकी कैक । हमार साम्ने फेन कीसान व सामन्ती के सल्ला कब्बु नै वन स्याकी कैक । हमार साम्ने फेन कीसान व सामन्ती के बीचम कबु नै मजा सल्ला बन स्याकी । काकरकी जमिन्दार त हर समय कीसानके पसिना चुसके मोटाए खोज्थ तब हम्र हेरी फेन कसाके सल्ला बानो त ? कीसानके भलाई किसान बाहेक और कुई फेन नै कर स्याकी । कीसनके भलाई तब हुई स्याकी जब सककु कीसान एक जुट होके आपन अधिकार — जबरजस्ती लोह स्यक हीं । हजुर कैक मीलना हुईलसे त पहिल से मील जेने रह । तर खे आज झन कीसान दु:ख पैल बात ।

अनजान म परल कीसान कहँ स्याकथ की बुहान गैलसे बहुत मजा हुईथ कैक । तर जौन शोषक ईहा बात का ऊ ठाऊँम शोषक नै हुईहीं त ? काकरकी आज हमार कीसान अन्जान म परके थोर-थार हुईल घर-बारी फेन हजम पारक सुखके खोजमे बुहान चलल बात । किसान हुँक सपना देख्थ की बुहान एक असिन ठाऊँ होखी जाहाँ कीसान-कीसान हुईहीं कैक । ई बात वास्तव म ना समझदारी हो । हेरी ! और मजासे सुनी और चारी ओर घुमी मजासे । के जान कसित अन्याय, अत्याचार भ्रष्टाचार काम आज बर्दिया, बाँकें, कैलाली, कन्चनपुर और हरेक जिल्ला मन हुई लागल बात । हुईनात कीसानन के भलाई कर्ना आवाज, सबजे बोल्थ तर यु मने कीसानसे जंगली ब्यवहार और अमानुसीक काम कैके किसानन सतैल फेन बात । बर्दिया जिल्ला म घर जरैना, घर उजाडके फेकना किसानन् हन बिना कसुर मरना पिटना त हुकनके साधारण काम हुईल बातीन नै हुईल से गोली चलैना हाथी लैजाके हुईलसे फेन बनाली नष्ट कर्ना आजके स्थानीय सरकारके मुख्य काम बातीस ईहै कलसे कब कीसान के भलाई हुई बुहान जिल्ला ओर फेन ! ईहै ओसें बुझीं की कबु फेन कीसान के भलाई दोसर जहनके हाथसे नै हो सेकी । हम्र देख्यो की दाङ्गसे बुहान जैना कीसान उपर दगदोम एकथो चौकी फैनकत्रा फटाही काम करथ और अनाहकम दण्ड लेक चार छ महिना दिन रोक दीहत असिनसे कसिन सतावा पैलक हुईती हमार थारू कीसान । दंगाली जीमदारनसे सतावा पैना, खेमासे कर्ना

केवल एक ठाऊके पूँजीपतिन कोसानन हमन बीग्राईल नै हुईत वल्की चारी ओर फेकल वात खट्टे-मक उरूस जसिन चुसक लाग हमार रगत ओर पसिना।

आवसे हम्र कौनो फेन जात पात फरक करना बिचार हन हटाके चाहे जें हुईलसे फेन कीसान बर्गभर एक्क हुईती कना जान परल बात। जें आपन हाँतसे काम कर्था उह हो किशान। आनक भरले खेती कर्ना मनै त शोषक हो; महा भारी शत्रु हो जनतनले ओही हन कीसान कना भारी भूल हो। आनक भर खेती कर्ना याने औरजान पसीना चुहैना/ मै खेतीहार हुइतु कथा कलसे उ त झन हमार भीत्रक शत्रु हो। तर हर तरहसे कीसानके पक्ष म समर्थन कैक कीसानके भलाई कर्था कलसे हम्र मीत्र मान सेकथी। हर जोतुईया केल हमार मीत्र हुईत कना फेन नासमझदारी हो। वास्तवम संसार भरके खेती कर्ना मनै भरत कीसान हुईत। हेरी आज हम्र कसीन बाती, काल कसीन बन्था हमार स्थिति तर एक जुट हुई दुनियाँ भरके जत्रा बाती तरँ पसिना चुहुईया कीसान।

जय गोचाली परीवार

ओ ! मोर दाई

लालबहादुर चौधरी

शुक्रवार दाङ

ओ! म्वार दाई जीन रो देव, काम र्कात बादु लड़ती बादु।
आँसके समुन्द्र जीन बहाव। तोहार रोग, तोहार सोच,
देशके अन्याय अत्याचार मस्ने बाँदु, बुझ्ती बादु, केरैती बादु,
लेखक बन्ने बादु सिंगार कर्ने बादु। यह वसैं दाई जिन रो देव।
बाघ-भाल मर्ने बादु स्वच्छ बनैने बादु, आँस आपन जीन फाको,
लौव झुल्वा लौव गहना लगैने बादु। तोहार लाग दाई हम्र लर्बी भिर्बी।
यह वसें दाई जीन रो देव, क्रान्ति - क्रान्ति - क्रान्ति कर्ती,
आँस खराब जीन पारदेव। बातु य कर्ती रहम,
कार्यशील, उन्नतिशील बन्ने बादु, वह वसैं म्वार दाई जीन रो देव॥

हम्र मनै, हम्र जिय पर्था

→(गिरीराज गोंचाली)

संसार के धर्तीक सेन्दूरह,
रफकेल होके फूलल लाल गुराँस
पक्खोम हिमालय के छातीम,
वैशाषके घामस के मुस्कैती
लाल - लाल धर्ती
बिहानक सेन्द्रार जैसिन
कब्भु फे नै मिच्छैना जैसीन
यी छाती नेपाल दाइक तिम्बि,
माया लागथ हमन ह
जुनी बितैना बात थुन्यार से हमन
तबफेन
हाल हमार द्वासर - द्वासर केल
हाड़म छाला ब्यावल,
चकचक भित्तर भुड़े - भाडीन्के
मलिन मुहार हमार
हमारतें दशिया नै आइत
कौनो तर-तिऊहार नै वाइत
हक्र यत्र जैसिन लोह के
एकदम थिच मझ्थी, घिसिया
मझ्थो
बारो मास चौबिसो घण्टा
सजाइक तैं उज्जर दरबार,
संगमरमर के
हम्र हुकनक मलिन अन्धार झोप्रिक
लाखो-लाख गरिब हम्र
दुईथो - चारथो धनी हुक्र
कसिक मेथ्ल बाट हमन
कसिक कसिक कुच्ल बाट हमन
जत्रा सहथी वत्र कुच्वा पैथी
नै चिरतसम हुकनक टाङ्गह
नै पवावरतसम हुकनक भुरह
हुक्र भुवा सेम्रक,
हम्र स्पात लौहाकिक
वह वसैं लगादी ताकत, यहिह
फाकक लाग
हम्र गरीवभर एक्क होके।

फूला

(जनार्दन चौधरी दाङ् दैखाङ्)

ओ! फूल ओ! फूल
तोर बानी देख्लु
ओ हुइलु अचम्भ ॥ १ ॥

माघ - पुसके जार
पाला - पथराके बहार
तोर नै हो परवाह ॥ २ ॥

बन - जंगल घन घोर
बाघ - भालु हुरार के
तोर नै हो परवाह ॥ ३ ॥

भारी-भारी पहार दरार
खोली - खापत गन्जरी
के तोर नै हो परवाह ॥ ४ ॥

हिला-किचामें जन्म लेले
काटा मूलासे लड़ले-भिलेँ
जिन्दगी भर सुख-दुखके
तोर नै हो परवाह ॥ ५ ॥

चैत - बैशाख के दिन
तातुल - तातुल भूमण्डलमें
फेनरात-दिन वहे कामना वहे बढ़ना ॥ ६ ॥

मुसु-मुसु मुस्कि मर्ति
हृदयमें बिकाशके कामना
कर्ति आगे बढ़ना
ओहे मधुर मुस्कानके साथ ॥ ७ ॥

आखिरमें तै चाँद बन्ले
सूरुज बन्ले दुनिया में
अमिट बन्ले समाजमें
बास-सुवास भलेँ देवतनमें ॥ ८ ॥

"अनुभव"

गणेश कुमार चौधरी सतगैंया, पिपरी गांव देउखुरी
आई- ए. फाइनल

एकांकी नाटक

पात्र (१) सन्तु (किसान)
(२) गौरी (सन्तुक गोही)
(३) सन्तुक जन्नी नारायणी
(४) भोलाराम जीमदार
(५) हरिशॅण सुब्बा

दृश्य

(स्थान, बुटवल जील्ला । उहे सन्तुक घर नयनवाग मूलचोक। सन्तुक कोठा, उ चिमचाम बैठके आपन आर्थिक जीवन के समस्या सोंचननाम मगनवा।)

दृश्य १

गौरी—सन्तु आज तू काकाँरगवा कुछ गम्भीर हो के सोंचतो कुछ समस्या बा ते कहो।

सन्तु— मौन धारण कै के फेन पाछे गौरीक आत्महे तृस करक लाग एक बार मुस्करा देहल (जवाफ नाही देत)

गौरी—नाही नाही! तोहार मनमे कुछ मोर उपर घृणा बा कलेसे मै यी ठांउ रहना धिक्कार बा!

सन्तु— शब्द नै ओना के उ कोठा से बाहर एकथो ३ वर्षके लड़के खेलाई लागल। सन्तुक उ नावालक लड़के हे गरीबी अवस्था पकरले रथीस। भूख के मारे रोइल-गथीस

गौरी—(सन्तु क पास जाके) आज तुहान में आपन छिमेको जानेके प्यार कैलु । सम्भव बा तूं महीहें आपन जन्नी फेन बनाई सेक्वो । तोहार बड़की जन्नी बा तमुपर प्यारते नही हे ज्यादा करथो ।

सन्तु—(कुछ मौन धाँरण कैके बोललस) आज मोरीक भाग्य के नियम बमोजीम ३ बीगहा क्षेत तैयार बा। मोरीक जीवन निर्वाह कैना कोनो कठीन नै हो लेकिन आज यी मोरीक बड़की जनेवा ऋृणमें डुबा सेकलस । जब मै घरे नै रथु यी बड़की जनेवा एक छीतवा धान देके एक माना सिधरा, केरा, जीर, जवाईन लेहत । यही कारण से मोरीक आर्थिक जीवन बड़ा कमजोर बा ।

गौरी—आपन घरे के परिस्थिती सम्हलना जन्नी मनैन के परम कर्तव्य हुईन । लेकिन बात यी बा कि जब थारु मनै स्वयम आपन घरके परिस्थिती में हेरचाह नै करहीते जन्नी मनै कैसीक करही ।

सन्तु—(उहे ठाँउमे सन्तुक जनेवा चुप लागके उ बात सुनेमे मग्न वा) नाही आज यी जनेवा नै रहत ते मोर घरके बातावरण सान्त रहत । यी कुल समस्या यी जनेवक हुइलक कारण से हा । आपन मनेक जाड़, दारु बनाके मोर मुँहमे उलदक खोजथ ।

नारायणी—(रीसके झोकमे लाल दिखाई परथ) सन्तुक आघे आके सिधरा लेहे पठ्इया, जाड़, दारु बनाई कहुइया तै हुइस । मोर उपर काकरे दोष लगाइते । दारु, जाड़ बनैबो तो चोरा चोरा पीय था पंयेबेर मजा लगथीस । आज अतना जनहन के सामने मोर बेज्जती करवाइले ।

सन्तु—(हाथमें लठ्ठीले ले) तोरी वेश्या घर वोरी । तोरे कारणसे मही हे आज धान लेहक लाग पैशा सापत लेहे परल वा । मेहनतसे के धन सम्पत बढ़ाउ, सब धान सिधरा लेले ओरवाइय । जतना धन सम्पत रहय सब तोर हाथे से जफत हुइथ । (सन्तु नारायणीहे ३ लट्ठी मारके बाहर निकार देहथ उ आपन लेहर भाग जाईथ)

गौरी—(सन्तुक घरमें जाके) आज तुहान ह ... तोहार दोष कि तोहार जन्नीक । थारु मनैन के मुख्य काम का हो ? आपन जन्नीन हे घर गृहस्थिमे संलग्न कैना । खराब डगर पकरले से असल डगर लगैना । (लेकिन सन्तु चिमचाम)

दृश्य–२

सन्तु—(एक हर गोरु लेके हर जोतथ उ खेतवा उहे गाँउक भोलाराम जीमदार—) अरे सन्ते अगर तैंआपन घरके परिस्थिती सम्हाल खोजते कलेसे मही से न्यायालय तक मुद्दा लड़ ।

कि तोर हिम्मत नै हो मुद्दा लड़ना ते यी खेतवा मही हे देदे । नैदेवे ते तोर एक हर गोरु और धन सम्पती हरण कैके फेन तुही से मुद्दा लड़े सेक्थु । आजतक २४० रुपया तबको घर बनाई बेर ले गैले आजतक नैदेले हुइस । काल्ह तुही उ रुपया बुझाइक परी ।

सन्तु—(उपाय रहीत लेकिन जोशमे) हे भोले आज उ युग नै हो जर्बजस्ती दमन कैके लेना । आज प्रजातन्त्रबा प्रजातन्त्र कलक जन्ता अपनही राजकाज चलैथा । आपन समस्या अपनही पुर्ती कर था । अगर तैं मही एक थप्पड़ थोक बे तें हमरे किसान संगठन मिलके सरकारकें जुनाफमे निवेदन चढ़ाब ।

भोलाराम जीमदार—(भूतपूर्व सैनिक संगठनके सदस्य) अरे सन्त फेन सदस्य मैं फेन सदस्य । आज यी खेतवा जर्बजस्ती जोतना कौन अधिकार । मैं अदालत में दर्खास्त देले तु, काल्ह निर्णय हुई ।

(दर्खास्त बमोजीम अदालतके दोर, सुब्बा, और भलाआदमी मनै सन्तुक अंगनम बिराजमान वर्ता)

सुब्बा हरिशेण—यी खेत भोलाराम जिमदारके लग्ना चाही । काकरेकि सन्तु जर्बजस्ती जोत तेहे । सब जाने समर्थक । निर्णय बन्द (सब जाने आपन आपन डगर)

दृश्य—४

(आज सन्तु बुढ़ान जैना सिबाई और दूशर डगर नै सोचया। सन्तुक आर्थिक, सामाजी जीवन और समस्या स्वयं ज्ञात करे सेकथो। (उहे समयमे गौरा आके सन्तु हे पुछथ)

गौरी— बुढ़ानमे फेन ते धनो लोग गरीबन हे सतैथा। यहाँ आपन जन्म भुमी छोरके नै जैना हो। (यी सब आर्थिक अनुभव गौरी फेन भोगलस) ते सन्तु काल्ही बुढ़ान जैना।

सन्तु—सब चाल ठीक ठीक बा मुर्गी बोल्ना जुन यी घर छोर के जैना बिचार बा। यहाँ बैठना धर्म नै हो। वहा गैले से बेस।

जब मुर्गा बोलला सन्तु आपन डेरा डण्डी और परिवार लेके बुढ़ान जैना प्रस्थान कैल। कतना दुखदायी समस्या लेकिन उहे चीज महाजोर सन्तुहे हअैलीस। आपन घर, मातृ-भूमि, स्नेहीवर, छिमेकी गौरी हे छोरक परलीस। सब जाने बुढ़ान जैना प्रस्थान कैला। आजके दिन सन्तुक लाग विरहके दिन हुइलीस। घर अन्धकारले छाँ गैल।

सच्चा पारी हमार हाथ

लक्ष्मण गोचाली घुस्रा दाङ

रुनुच्या स्वरम स्वर थप्क, गलिल-गलिल क्रन्दन रोदन,
कत्रा भुश्यो तुह्र कुकुर बन्क। लेल्वैया बा परिबर्तन।
मनै मनैन्म फरक देखाक, मर-सर कामकर्था त्वार घर,
कत्रा लडयो तुह्र दोस्त्रा बन्क। ओह्र त म्वार भैया हो।
शान - मान धाक - रवाफ, त्वार ओ म्वार बात बृति से,
खाली एवथो पैसाके। आखीर ऊ सह्र ठग जवैया हो।
पुजिपति के शासन तुह्र, लेकिन नै हो ई सच्चा बहकोही,
क्रान्ति हुइना बा गरीबको। हम्र बाटो वाकर साथ।
महल वाले ढेन्रा बाबु, आव गरीब एक्क होक,
खतम हुइता तुन्हक दिन। सच्चा पारी आपन हाथ।

गोचाली गोचाली हम्र बिग्रल बाटी कसीक

जगुलाल चौधरी, दाङ (बेलुवा)

गोचाली-गोचाली हम्र बिग्रल बाटी कसीक
हमार जन्मल ठाउँ होख
हमार रहल गाऊँ
मिलोजुली काम करी
बनाई आपन ठाऊ।
हाथम लेथी कलम कापी
लिख नही जन्ती
लौव—लौव जुगहन
बुझ नही सेक्ती।
लिख्ना पढना काहो कथी
चुप्प लागल रथी
अन्याय व अत्याचार देख्ती देख्ती
हाथ थाम्क रथी।
कौनो धनी कौनो गरीव
संसारम रथ
चार पैसाके डर डरैथी
पढ नही सेक्ती।
मुहहोक लाट बाटी
आँख होक आन्धर
हात होक लुल बाटी
ग्वारा होक कुज
पढना कलक काहो कबो
बुद्धि बढैना हो
बुद्धि बढैना कलक काहो कबो
ज्ञानी बन्ना हो।
गोचाली-गोचाली हम बिग्रल बाटी अस्तक

३

दूइथो बात

शत्रुघ्न गोचाली-मवे

मनै मुअकते जर्मलक नै हो, बेन जियक ते जर्मलक हो। प्याटकेल पालकते जिनात संकिर्ण व घिनलक्टीक विचार हो। ऐसिन घिन लक्टीक विचारह ठाऊ देलसे मनै उन्नतिम नाही बेन वजहन्नेम परजाई। जिना त एक्थो कुक्कुर फे जियल रहथ, घिन लक्टीक्से-घिन लक्टीक जीव फे जियल रथ, प्याट पाल त के नै जानल हो ? त फे याकर तरिका न रहथ। मनै होक मनै नातासे मनै अस बाच परथ, कुक्राअस नाही। मनैअस जियकते दुई बातके जरूरी बा। समान्ता, शिक्षा व रोटी।

हमार पछगुरुक दुःखी दरिद्री समाजम, शोषित समाजम किसान तथा मजदूर वर्गहन, उप्पर कलक दुई बात पुगल बात कि नाही, यी बात विन-विनक हेर्ना जरूरी बात। रोटी के वारेम एक्थो किसान बहुत उब्जाइथ। एक कामम व्यस्त मनैन के नाता से ऊ भुख नै मुअ पर्ना हो। याकर ठिक उल्टा रोटीक उपयोग एक्थो किसान या मजदूर, कथ्याक कति बात यह फेन जानपर्ना बात हो। खेती के बारेम एक्थो किसान धान, गहूँ, जौ चाना, मसो, कोक्नी, लाही आदी बहुत धेर उब्जाइथ त फे याकर ठिक उल्टा ओहिहन मारक पानी फे कहाँ पुगल बा ?

यी कसिन अच्चम्मके बात हो। याकर बारेम त हम्र सक्कुज एक घरी विचार करी त, तब हमन उत्तर अप्नहे आ जाई। यी कौ नो अचम्मके वात नै हो, 'यी त हमार शोषकसे दबल रहना हमार कम्जोरी हो'। याकर मुख्य कारण दबाव व अशिक्षा हो। मेहनतकस जात आनक कमैया हुइथ, आल्सी मालिक बन्थ। यी उल्टा चिजह जलु कसम सपिल्टा नै बनाजाई तलुकसम शोषण रहित समाजके सृजना कब्भु फे नै हुई स्याकी। औ मानवम सुखी जीवन कब्भु फे नै आइ स्याकि। परिश्रमके मिथ फल व इज्जत नै मिल्ना जिव ऊ जीव नै हो, वेन मुलक हो। अस्तित्व रलक जीवन मुअल नै हो वेन जिलक हो।

शोषक व जिम्दरवा अनावस्यक दबाव ले मेहनत कस जातक जीवन हन दुक्काइल वा, घिन लक्टीक बा और भटकाइल वा। यी अवस्य हनन सम्झ लायक ता कि एसिन वजहनेम परल जीवनसे बेन संघर्ष (लर्ना) मज्जा बा। जब मनै मनैन्म एक्क नास व्यवहार नै होत, इ संसारम कुछु नै हो। वह वसें ऐसिन जिवन नरक जैसिन वा। गोचाली हुक्र नरक उहाँ

बा जहा दुःख बात यहां प्याटभर खाइनै मिलथ जहाँ सक्कुवसें मस्चिसक मुअ परथ कलसें यह हो नरक। सम्झी गोचाली हुक्र उहा घोर नरक बा जहाँ शिक्षाके सताहा अंधार व असमान्ता बा। वह वसें नरकसेत बेन अधिकार व कर्तव्य पाइक लाग संघर्षकर्ना मजा बा।

हम्र देरव्थी-मीलम मजदूर हक्र बहुत चीज तैंयार कर्थं त ठिक याकर उल्टा मजदूर मरिच बन्ल रथ, उब्जलक चीज पूजिपति अथवा मलिक्वन्के प्याटीम जाइथ। मजदूरहुक्र आपन उब्जलक चीज बेल्स नै पेत। अत्रासे कत्रा कनाहो त ? वस्तक बहुत दिनसे किसान तथा श्रमिकवर्ग आनक कमैया बन्क बैठल बात। शिक्षा वर हुक्र स्वतन्त्र नैं हुइत। अस्वतन्त्रताके पिंज-राम बिद्या देबी कसिक आइ सेकहीन। धनदेबीक डाट-फटकारसे बिद्या-देबी त उहासम पुग नै सेक्थी जहाँ एक्थोर गरिब किसान बात। वह वर्से श्रमिकवर्ग जस्त रहल बस्त बात। शिक्षा व समान्ता बिना श्रमिक वर्ग अन्धारम बात। सब्से वर धन बिद्याह हम्र भुल्बीकलसे हम्र कब्बु नै उठ सेक्बी, दबल रहबी ओ वजहन्नेम पर्ल रहबी।

पूजिपति हुकन श्रमिक वर्ग शिक्षित हो जैही कना बहुत भारी डर वातन काकर कलसे शिक्षित मनै चतुर रथ। उहीह आपन अधिकार ओ कर्तब्यके ज्ञान हुइथीस। शिक्षित मनै दबाब सहनै स्याकत कना पूजीपति हुकन थाह बा। ओहवर्से हुकन दबावके अनावस्यक जंजिरम बान्ध नै सक्बीकना डर बाटन। गरीब, किसान, शिक्षित बनहित हुक्र किसान के लर्कनह पग-पगम खसैना चाचो कर्थं। सद्भर हुक्रनक बनावटी रामसक बनाक नै पढल गरिबह धर्म के भुल भुलैयम पर्ना हेरैहिन। हुक्र काम कर नै मन परैथ सद्दभर मालिक बन्ना मन परैथ।

वह वसें हम्र तरक बात नैं भूली "पढी हम्र ज्ञानी बनी, दबाव हम्र हटाई वैज्ञानिक बनी, हम्र जाई नाम कमाई, दास प्रथा हटाई हम्र पुरान बिचार छोरी, लौव बिचार लेक आग बढी" नैं त हमन आमीन अस्तह दबावम पर परी। दास प्रथा आझुक जुगम घिनलक्टीक चलन हो। यही कौनो फेन किसान मन नै पराइत। सांस जाइबेन दास नै बन्बीकना बिचारलेक संसारम हम्र आग बढवी कलसे शोषण तथा दबाव हमार समाजमसे हेराई तब हम्र सबज सुखी बन्बी। परिश्रमनुसार फल हमन खोज्ना अधिकार बा। समान्ता शिक्षा रोटी-रोजी परिश्रमनुसार पाइकटे हम्र आंखीरी सांस सम्म लड़ी।

कम्मर कसी सक्कु जान

—कालिदास चौधरी (बर्दिया)

कम्मर कसी सक्कुजान प्रगतिक पथम,
कोईनै रोको हमन इ पंचायती राजम।
यह होख माटी हमार जन्मलक देश हो,
जीय परल मनै बन्क जन्मलक ठाऊ हो।
कम्मर कसी ·········राजम।

सहुभर भरोशाम आश नहि रहि,
दानव के सेवाकैख ध्वाखा हमार रहि।
अन्यायक कद्दरकर्ना खोजी ध्वस्त पारी,
अन्धकार समाजक पर्दा हम्र फारी।
कम्मर कसी·········राजम।

दुख दर्द नासकर्ना कर्तव्य बा जरुरी,
चौद ववाठा नेपालक हुइती हम्र फूलवारी!
आघ बढी खोजी हम्र सृजनक मुहान,
स्वतन्त्र बा जगत यी उन्नतिक द्वार।
कम्मर कसी ······ राजम।

लौव भाषा लौव संदेश देशभर छैवी,
बिज्ञानक भरले हम्र समाज सेवक बन्बो।
लाखन ज्योती डगरिस आघ हम्र बढ्वी,
सृजनक लौव भाषा समाजम फुलैवो।
कम्मर कसी·········राजम।

जागृतिक कदम उठाई सक्कु भाई मिल्क,
सामाजिक विख्वार एकता नै पैबो।
कल्मषक बिरुवाम पानी नाही परी,
शोशण दोहन खतमकर्ना गरीबन्के खोजी।
कम्मर कसी ·········राजम।

जुग गैल हेरो भैयो स्वशणकर्ना आब,
लक्ष लेक आघ बढना मौका मिर्ना आब।
बेर नाही लागी हमन उन्नतिम पुग्ना,
अधिकारक जरुरी बा पढ हमन पर्ना
कम्मर कसी ······· राजम।

चारोवर चेतना देक पैला सारी आव,
वकलाअस ध्यान देना समय नाही आब।
आल्सी करम् पापी हुइवो, समाजक हम्र,
कम्मर कसी·········राजम।

साहित्य दुई चार व्यक्तिके आपन मज्जा बनाइक लाग नै हो व्यक्तिगत सम्पत्तिके बनाइक लाग नै हो। ई सर्वहारा बर्गके सामूहिक स्वार्थके लाग स्वतन्त्र हुइ पर्था। —लेनिन

धर्म जनतन्के अफिम हो, व ई स्वसणके समर्थन करथ।

—मार्क्स

संगठन करी हो

(चंद्र प्रसाद चौधरी जलौरा दाङ)

संगठन करी हो—२

एक्क संग एक्क गोला डगर नेङ्गी हो ।
सुस्त[1] बोल लागल बिकाशक नारा,
हमन फेस तिर्नबाल आपन जिम्मा भारा ।
हाथम झांझ, काधम मन्द्रा बजाइ एक पाला,
कोनो[2] नाच्च दारी पक्का फेंन आज ।
चिन्ता जैसिन श्रमोक बनी हो[2]
एक्क डगर एक्क लहर काम करी हो ।
शत्रु देखि बन्बम गोरुअस गोल बनाई,
चारी वर घेरा बनाई बिचम बच्छु राखी ।
शत्रु देखि सामना कैक संगठनकथं हुक्र
बाल बच्चा अचा दथ बन्वम बैसकफें,
बैरिन्से सामना कथं जाबो जन्तु फें,
हम्र त झन मनै हुइती संघ बनाई हो ।
आपन बाबु आपन भैया बलाई आब झट्ट,
उन्नतिक टेल्वा लगाई बढाई आग झट्ट ।
श्रम करी हो, ख्युरम ठरीयाई हो,
आनक भर आनक बल नाही करी हो ।
युग जमाना फिर्तिबा रंग बिरंग संसारस,
आपन हक पाइक लाग मुबीलफे का हुई नेपालम ।
जस्त शुक्रराज, धर्म, गंगा, दशरथ हुक्र
दाइक लाग मरदेल हसती - हसती हुक्र
झट्ट लगाई संघके टेल्वा झट्टु लगैना हो ।
फुलल - फरल चिख पैहि भाबी सन्तान हो ।
संग हासी संग खेली संगाकि सहेलिया,
झट्टु - झट्टु आग बढी गौंको गबलीया ।

पाप (बत्कोही)

श्री टेकबहादुर चौधरी

दांग (सिसिनियां)

एक देशम श्रीपुर गाँऊ रह । उ गाँउम एक मनैया रह, ज्याकर नाँऊ कर्णबीर रलहस । उ साधारण किसान रह व रह ज्यादा परिश्रमी । उह ओसें वाकरलाग एक मानाके सन्तोष रलहस । ज्यादा इमान्दार व एक दुई अक्षर लेख पढ़ जानल हुइलक ओसें रानपास के मनैनके पत्यारू रह । सन्तान कुछ कम नै रलहीस तीन भाइ छाबन सुरुज के जोति सक घर अजरार पारल रलहस । जिहीमसे बरकक नांऊ किरण, मझलक प्रकास छोटकक दीपक ।

किरण जब दाइ बाबा कना हुइल, तबसे वोकर बाबा ओहीहन पढ़ाइ लागल । हुइना तेल्वक टेल्लार पत्या, नै हुइना तेल्वक भुवर पत्या" कना उखान असक किरण छोतीय मसे ज्यादा तेज बुद्धिक रह । जब उ ग्यारह वर्षके रह, तब उ छैठों कलासम प्रवेश कैदारल रह । रान पास मनै किरण के तारिफ करत कि ई लौंड़ा त बहुत पढ़ी । पढ़के समाजक सेवा करी । वह ओसें रान-पास के मनै किरण हन प्यार करत ।

वह गांऊम कोटेलाल नाऊ क एक मनै रह । उ ज्यादा शोषकके प्रवृतिके रह । उ गुरुवा फे रह । थारू समाज शिक्षाम पछ गुरल रलक ओसें अन्ध विश्वास के जड़ गाडल रहना स्वभाविक बात हो

किरण छोटीयमसे ज्यादा सुधारवादी विचारधाराम् बुरल रह । पुरान अन्धविश्वासके नाश कैक लौव प्रगतिशील समाज के सृजना करक तें महा कोशिश कर । जौन फे मनैन के साम्नेम् गुरुवा घामी, झांक्रीके घोर विरोध कर । गुरुवन, झाँक्री व घामी हुक्र समाजम अन्धविश्वासके जर हन वलगर पारल बात कना किरण हे पूरा विश्वास रलहस । वो समयम किरण छैठों कलासम् पढ़त रह । अन्ना छोटी कलासम पढ़ना

लड़कक ऐसिन भावना जागृत हुइना यकर भविस्यक सफलता के चिन्ह हो ।

उ गाऊके महतावा (कोटेलला) फे गुरूवा हुइल वरसे किरण के ब्यवहार देख्क ज्यादा क्रोधित रहँ ।

कोटेलाल चौविसो घण्टा इह सोच कि कसिक किरणके भविस्यह विगरना हो कँ क । यी ससुरत हमार घोर विरोध कर्ती वा । सब रान पासके मनैन ह आपन वसम कई स्याकल । अत्रा अनारी उमेरम त इ ससुर ऐसिन करथ कलसे, जवानी अवस्थाम् पुगी त कसिन करी । यी ससुरहन नै विगारक का छोडवु । मै जानल वातु मोर स्याममति छाई हे दिह परल ससुर । जब भोज हो जैहिस त ज्यादा पढ नै पाइ त ऐसिन काम काकर करी ससुर । कोटेवाल ससुर आपन पठरीम् सुत्क अतरा विचार करल वा निद्रादेवी के स्वागतम लागल । ऐसिन निर्दोष समाजसेवी भरखर फूल लागल कमलके फूलाअसक लड़कक भविस्य विगारकलाग ऐसिन षड़यन्त्र रचना कोटेलाक के जिन्दगी धिक्कार हो विचारा किरणके का दोष वतस इहम ? जो कुछ करतह किरण समाज के सेवाक लाग ।

हुइना फे (कोटवाल) ज्यादा पापी मनै रह । रान-पासके सब मनै उहीसे ज्यादा दुःखित रलह । तब फे काकरत विचार न । अशिक्षित् रलह, कम्जोड । कोटेवालके साम्नेम् किऊ फे वाकर विरोध कर नै स्याकट । कुछ एक दुई वात वोल्लसे फे पख देखाजाला सालेका । तोर लड़का नै विगाड़क का छोंड़म ससुर कैक दुरुवैल रह । कोटेबाल रान-पासके मनैके अत्रा स्त्रषण कलरह कि हदसे ज्यादा बयान कैक साध्य नै हो ।

किसान हुकन विहान सबेर कल्वा खाक आपन कामम जाई परलक ओर्से हुक्नके जन्नी (भंसहरी) बिन मूगि बस्ल खाना निध उठ जेठ । बस जब गांऊके भन्सहरी उठल कि कोटेवाल दहरती आ पुग जाँड़ छाबोरी बोस्किन्या ससरी करती । कोटेवालके बोल सुन्तोकिल भन्सहरी चूप लागक, मलिन मख लागक संठरी लेक भंकुरीम हाथ गीज्वारतँ विचारिन् । गाँऊ-गांऊके कैयौथो जन्नीहनत दुरूवाके जबर-जस्ती करनी फे कँ डार । गाँऊ-के फे कैयौ थो विधवा जन्नीन विगार डारल । अत्रा अत्याचार करतह कोटेवाल फे, तब फे, ई वाकर विरोध प्रत्यक्ष रुपम कर नै स्याकट ।

कोटेवालके विरोध करूइया खाली किरण रह । वह ओर्से कोटेवाल कर्ण-बीरहन, वोकर छाप किरणहन विगरना वहुत रचना रचल रह ।

एक दिन कटेवाल किरणके घर आक किरण ह आपन छाई देना सवाल उठाइल । शत्रु अपनहें घरम छाई दिह आइल बर्से नै लेना कसिन मनै हुई जे । जैसिन हुईले से मनैक दारीमनै छावाछोटी हुइल से फे का हुइल त । आखिर बढ़ाकन भोज करना स्वीकार करल । रूढ़ीवादी पुरान थारू समाजके परम्परानुसार कोटेवाल आपन छाइक झांगा १५०० पन्द्र सय रुपया एक घार्नी तेल, एक धार्नी न्वान, २२ (बाइस) गज बारुहवार मागल । किरणके घरम एक मानाके सन्तोष रहलक ओर्से ओत्रा देना उ कुछ नै हिच-किचाइल । यी माघ महिना के बात हो । जब फागुन लागल तव खुब धुम-धाम से भोज हुइल ।

किरण छोट उमेर रहलसेफे उ बुद्धिमा कुछ कम नै रह । दुल्ही वनाइल सुन्ती किल उ एक दम गम्भिर हो गइल । एक बेउद्धार, पानी भरल गगरी सक गम्भिर फारा लादल रूख्वा सक नम्र, पानी वर्सना सक गम्भीर मनै रह । किरण आपन बावक ज्यादा डर मान । वह ओर्से उ आपन बाबक साम्नेम् एक शब्द फे नै ब्वाल स्याक । आपन साथीनके थे कैयौ फेरा कहकि जब मोर भोज कोटेवालके छाइ से हो जाइ त मोर भविस्य खतम होक जाई । काकर कलसे मनैनके साम्नेम मनै रथ वो दानव के साम्नेम दानव । मानव वो दानव कब्बु नै संग-संग बैठ सेकजाइ कितो दानव हे नाश कर परथ कि तो अपनहे भाग परथ । वह ओर्से जब मोर भोज कोटेवाल के छाई श्याममति से हो जाइत, लोहक शरीर कैक बैठ परी । नै त कलसे गांऊ-घर छोड़क भाग परी । हुइना फे कोटेवाल जैसिन मनैन हन मानव के संज्ञा नै देक दानव के संज्ञा दिह परथा ओत्ति-ओत्ति ऐसिन वात कलसे फे किरण आपन बावक थे कबु फे एक शब्द नै कह स्याकल ।

जव माघ महिना खतम हुइल फागुन लागल तव भोज के तैयारी के लाग हरेक किसिमके सामा-जामा हुई लागल । किरणके हृदयम करिया बदरी छागैलस । जब प्रत्येक किसिमके सामा-जामा तयार हुइल, तव बुधक दिन दिउली फुटल, मंगर के दिन लगन हुइल ! जब मंगलवार के दिन (सांझ) ४ चार बजल कि गांऊ भरके बुढ़ाइल-पाकल मनै मांगर गैती दिहुरार जाई लग्ल । जौन मागर यी किसिम के रह ।

हरे मथशिर पगिया, मैं चली जैवु धनिर बिहाय ।
लेव'– पुता र मोर, मथ शिर पगिया
तुहुं जाऊ पुता धनि रे विहाय ।

कौनो मनै जन भितर वहरी सरक फरक करत । सुरहवा, पनेरी जुन ईहोर उहोर गल्ली गल्ली सरक फरक करत् । कुई ढाला बनाइत कुई २ जुन झट्ट दुलह खोजक लानो ससुर कहाँ मरलबात, कटी एहोर ओहोर किरन हन खोजत् । विचरा किरनके सारा हृदय भर करीया बद्री । उह गाऊँम प्रभात कना एक किरण के सच्चा मित्र रहलस । किरण ओ प्रभात पैरक कुरहट्टया म बैठक उह बिवाह सम्बन्धी बात बतोइती रह । ठीक उह समयम मेदुलाल आगैल । मेदुलाल एक दुई गाऊँ के किसान हो । उ ज्यादा पल्यार रह । उ किरण हन पुगी शायद एक थप्पर गालम पिटल । ओ कहल चोल गधा किरण्या । ज्याकर भोज -विवाह हुईना त, असीन कर्था गधा ससुर ! बिचरा किरण ग्यारह वर्षक लड़का काकर, वाध्य होक सरासर नामल । ओकर साथी प्रभात पैरक कुरहत्था म निराश होक बैटक रोई लागल । आपन सामनेससे साथी हन थप्पर लगाक लैजाईबेर उही हन आपन मुट्ठ चीड़क लैगईल असे लग-लीस, बिचार हन !

जब दुलहा सपराक सेकल ठीक सूर्य फेन पश्चिम ओर आपन दैनिक कर्तव्य पुरा कैक डुवल, बरात के उह गाऊ दुलहोक घर ओर प्रस्थान करल । किरल हन ४ जन मनै डवालम बोकल रलहस । किरण के लाग ई सक्कु सपना अस हुईलस । जब दुलही के अँगनाम बरात पुग गैल तब थारू समाजके परम्परानुसार जौन कर पर्ना हो सब चिज कैक भित्तर लै गैल । दोसर दिन के १२ बजे, सब चिज कैंक दुलही के तर्फ से मनै रीत पुर्वक बरात हन बिदा बारी कर्ल । उह रात घर ओर प्रस्थान कर्ल ।

उह दिन जब झमक्क साँझ फरल तब दुलही तर्फ के मनै दुलही हन रूअईती जबरजस्ती डोलीम डारदेल । डोलीम दुलही हन वोक्क खेम्वाम धरल ओ चौठयार नाच लगल । जौन नाच के गीत असीन रह ।

ईहरी अँगनवा म खोलनु ओ हसनु ।
ईहरी अँगनवा छुटती मैया लाग ॥

बोकक जमात के साथ दुलहा-के घर ओर प्रस्थान कर्ल । ठीक दुलहा के घर पुग-पुग करलगल तब, दुलही के रुवाई के वेग जबर जस्तो रोकल । डोल बोक्वोन डोली लैजाक दुलहक सामनेम धै देल । डोली धई ओईक चौठयार के दोश्र नाचलगल । जौन नाच के गीत असीन रह ।

उँहर मैं गैनु हरे ! एहोर मैं अईनु !
आ पुग्नु मैं त सैयाँ के अँगनवा ॥
कौन कारण अईनु मैं तोहरे अँगनवा ।
राम । राम । तुह जिन रीसाओ ॥

ई सब दृश्य बड़ा अदभुत देखा पर । ई समय म त क्षन दुलहा किरण के हृदय एक दम दुःखित-पिड़ित हो गैलस, जानो कौनो मनै मुअल बात, बस जब चौठ्यारन बुझाक स्याकल त जाती परम्परा अनुसार परछ के दुलहा-दुलहीक सेवा-पाई लेल । किरण हन हमेशा संग सँग खेललक हसलक साथिन के सामने म मुँह देखाए लाज लागतलस जानो कौनो चिज चोरी कै राखल । ई सब चिज किरण के लाग सपना बराबर हुईलस ।' जौन २ कर पर्ना हो सब चिज कैक अतिथि बर्गा के साथ सब जन्न दैनिक निन्द्रा देबी के स्वागत कर गैल ।

जब मुर्गी नै बासल रलह तबह भन्सा कर उठगैल । जब बिहान हुईक जाती परम्परानुसार जौन २ कर पर्ना हो सब चिज कैक दुलहीक तर्फ के मनै दुलहाके तर्फ के मनैन रीत-पूर्वक बिदा बारी कर्ल दुलहीके मनम फे शायद, अनेक किसीम के तर्क बितर्क हुई तलहीस । "गाड़ी के दुनु पैहिया बराबर नी होक उ कभु फे आपन लक्ष्य पुरा कर नै स्याकत ।' ई त सक्कु जन विचार कर सेकना बात हो । आपन दुलही २५ वर्ष क रह ओ दुलहा ११ वर्ष के ।

२५ वर्ष के युवती ११ वर्ष के लड़का से भोज हुई वेर ओकर दिलम कत्रा चोट लागल हुईहीस बिचारह । ई विशयम के ही दोष देना हो त ओकर दाई बावा, कि समाज ह । 'एकत ओकर बावा बड़ा भारी अपराधी हो, मूख्य दोषी हो मिचाहा, चुसाहा । दोश्रा हो रूढीवादी थारु समाजके परम्परा । ई दुई थो हो मूल दोषी ।'

वैशाख म लेह् गैल त दुलही रोक गैल काकर विचारो ! जन्मपाईल पापी ! रुढ़ीवादी समाजम दानव के कोरखम ! ओकर बावा हो महान डर लग्ना असे दानव ! काकर ? बाध्यहोक रो रोकन जाई पर्लस बिचारो हन ! बिचारी मलीन मुह लगाक पतिगृह ओर नामल । 'बसन्त के विहानम फुल्ल फुला अस युवती आज त रस चुसल, झरक लाग कुलमुलाईल फुला अस मलिन वा विचारी । उहर किरण फुलाम गाँधो किरा लागलअस मलिन वा विचारा !

भोज का करकते कथं ? केवल भोग ओ बिलास के लाग नाहीं ! कि सन्तान के लालसाले, अन्धकारम डुबल घरम बत्ति जगमगाईकते । जस्त हे कहल बा , स्त्री एक शक्ति हो जौन कि एक घर हन एक सुखा रेगीस्तान उब्जाउ भूमि बनाई सेक्थ ! तर किरण के भोज हुईलस ई सबके विपरीत हुईक ते । जब कर्णबिर आपन छावा किरणके भोज नै कर्ले रह त । ओकर घरम सब चिजके पूर्ति रलहस । आज उ सब चिजके अपूर्ति हुईल-गलस । ओकर बड़का छावक नांऊ किरण रलहस । "किरण आपन घर ह आघ ओस्तहे अजरार पारल रह जस्त हे सूयँ सारा संसार ह ।" जौन समय कि किरणके भोज नै हुईल रलहस । जब किरण के भोज हुईलस त ई सबके विपरीत । जब किरण के भोज कर्णबीर नैं करल रहत, जौन२ चिज ओकर घरम रलहस, लक्ष्मीके निवास रलहस । जब किरणके भोज करल तब ओकर घरम लक्ष्मी वासकर छोड़ देलस, हरेक चीजके क्षती हुई लगलस । हरेक प्रकार के बिघ्न बाधा पर लगलस । आब भरखर उही ह थाह हुई लोस कि बिना दुलहा-दुलही के मन्जुरी हुईल भोज करना महा-भारी अपराध हो, महाभारी पाप हो" जौन किसिम के पहिल कर्णबिरके घरम चन्चलाश्री रलहस उ सब चिज कहां गैलस ?

एक वर्ष सम त दुलही श्याम मति आवाजाही करती रहल उह ओर से दुलहा-दुलही क बिच कौनो किसिमके मनोमालीन्य नै हुई से कलस । एक बर्ष के बाद दुलही श्याममति अड्चाएगैल निश्चित रुपले, ठीक उह बर्ष किरण आठौं कक्षाम प्रवेश कैं रखलहा । ट्रान्सफर सर्टीफोकेट फेले स्याकल रह । आब उ नेपाल गंज श्री एम० पि० बहुउद्येशिय हाईस्कूल (श्री मंगल प्रसाद बहुउद्येशीय हाईस्कूल) म अध्ययनार्थ जैना तयारी म रह । एम० पी० बहुउद्येशीय हाईस्कूल किरणके घर से लगभग २०-२५ कोशके दुरीम रहो उह ओरसे घर छोड़क जाई पर्ना रह काकर कि घर क

लच्छु कौनो फेर हाई स्कूल, कलेज, युनिवर्सीटी नँ रह । किरण आपन साथी प्रभात के साथ-साथ अध्ययनार्थ एम० पी० हाई स्कूलम भर्ना हुईल ओ आपन डचारा डण्डी लेक छात्रावास म गैल । जब से किरण पढ गैल तबसे उ कभु फेन घर नैं आए ! काकर कि पहिला त भोज हुईती सायत म ओकर हृदयम आघात पहुँचल रलहस ओ कन्या बद्री छाईल रलहस लेकिन जब ओकर स्त्री घरम अईलस त झन कन्या बद्री केल नाहीं गहीर क मुनी फटना कुहीर फे घेर लेलस । किरण म पहिल जौन प्रकार के चंच-लता रलहस थाह नैं हो ! उ कहाँ गैलके, विचारक एक त ऊ गम्भिर स्वभाव के मनै रह झन ओकर आतमाम, नाना किसिमके यातना, विघ्न बाधा, चिन्ता घेरलेलस एकर लाग केही दोष देना हो त ? समाज हन कि ओकर दाई-बाबा हन कि ओकर राउट टेकलाल हन ! एक त रुढीवादी समाज दोषी बात, दोस्रा किरण के राउत टेकलाल हन ? ई दुई जन महान दोषी हुई त, महान अपराधी हुई त । काकर कि एक फुल नि फुलक कुम्लुलाई परलीस, अफशोष !" टेकलाल के जिन्दगी ह बार बार धिक्कार ! काकर कि "उ मानव समाज म जन्म लेकर फे दानब के रीती अपनाईल, ओकर अस्तित्व मानव समाज मन नी होक" दानव के समाजम गन जैथा ।

टेकलाल श्री पुरके महतावाँ रह । उह गाउँके जिम्दरवा जुन रामु रह । टेकलाल श्री रामु कैं बिचार खुब मिलन । काकर कि मानव के बिचार मानव से मिलथा ओ दानव के बिचार दानव से । रामु फे ठीक ओस्तहें रह जस्त की टेकलाल । रामु किसानके घरमजाक जबरजस्ती मुर्गी, सुअर छेग्री मारक जाँर, दारु बनाए लगाक भत्यार लगाए । एक घडीक लाग किसान के छाईन, पतोहिन के ईज्जत फे लुट । ई किसिम के शोषण फे कर्ले रह रामु । सब गाऊँके जनता पिड़ित रलह उही से का करत विचारन । "अशिक्षित रलह, शक्ती होक फेन शक्ति विहिन हुइ परथा परिस्थिति बश ओ रलह हुक अन्धविश्वास म परल ?" गाऊँ भरक मनै कुईं फे नैं टेकलाल ओ रामु के विरुद्ध प्रत्यक्ष रुपम विरोध कर स्याकत । हुँकन के विरोध करुईया रह खाली कर्णबिर रह । उह ओर से टेकलाल ओ रामु हरसम्भव कर्णबिरहन बिगर्ना अभियान रचती रहँत ।

किरण के पत्नी छोटेलालके छाईं श्याममति से भोज हुईलक खस

म पर गैलस। छोटेलाल ओकर शत्रु होकन पहिल फे ओहीह थाह नै हुईलक बात नैं हो तर आत्र अविस्वित रुपम थाह हुईलस कि ई सब रामुक काम हो कैं क ! तब कर्णविर कहलागल कि ई ससरन त महि हन बिगारक ते खुब अभियान रचल बात। जब मोर खैना वदा (भाग्य) हुई कलसे ई ससरन करीया मोछ होक का रोक से कहीं।

४-५ वर्षके बात हो जब किरण *S. L. C.* ट्रान्सफर लेक घर आईल। रान पाश के सक्कु जन उही से भेंट कर अईल ! ओकर दाई बावा फेन ज्यादा खुशि हुईल। ओकर भैया, बावु हुक्र झन हमार दादु अईल कैख आग पाछ लसफस करलगल। श्याममति त लाल-लाल नयन लेक सक्कुनके तमाशा ह्यार लागल। का करकि ओकर भोज हुईलक ६-७ वर्ष हो गैलस तब फेन किरण के प्यार के शब्द एक्को नैंसुनल हो। कारकर कि किरण आमिन सम एक थो विद्यार्थी वात्। घर भरीक मनै एक-साथ मीठ-मीठ बात बत्वाईलगल। गाऊँ के ४-५ जन मनफें उहाँ उपस्थित रलह। जब झमक्क सांझ परल तब कर्णवीर के दाइ लोट्या लेक खाना तयार हुइल कैक खबर देह आईल। किरण दिन भरीक भुखाइल रह उह ओरसे उ सक्कुन से खाना खाय जाईकते आग्रह करल। तब ओठे रलक सक्कुजन भन्साम गैल। जेहिम घर भरीक परीवार ओ गाऊँक ४-५ जन फेन उपस्थित रलह लेकिन श्याममति नै रह। सब जन खुशिके साथ खाई लागल। पैलत कुई फे ख्याल नै करल कि श्याममति आरहल कि नाहीं कैक ! किरण जब ४-५ गास खाक ईहोर उहोर ह्यार लागल त श्यानमती ह नै देखल। श्याम मति ह नैं देखल किरण आपन बावु रुपमति ह कहल कि–"जा बाबु आपन भौजी ह वलाक लयान् !" रूपमति आपन दादुक बात सुनक झट्ट आपन भौजी श्याममति ह बलाए गैल। रुपमति आपन भौजी ह "भौजो भात खाय चोल" कैक का कँरखलहर कि श्याममति लाल नेत्र देखाक कहमरल कि–"नै जाईथु तुनहक खाना खाए। आपन मन परल भौजी लया नो न ! का हेरती बातो।" बिचारी रुपमति अत्रा बात सुनके मलीन मुँ लगाक घुम आईल। आक आपन दादु किरणके थेन यथार्थ हाल बत्वाईल। ई सब सुनक किरणहन बहुत रोस लगलस। किरण जुक्क उठल ओ कहलागल "जाक चार झापट नी लगाक काहुई ! ऐसीन जन्नी नै हुई त का हुई। ऐसीन छोनार जन्नी हुईलसे त नै हुईल भगा !" अत्रा कैख गैल।

रीस पानी अस जुर हो गैलस। किरण जाक श्याम तिह खुब समझाईल। तब फे कुछु उपाय नो लगलस। उ निराश होक चलाईल। मनमन कहलागल कि–"ई सब श्यामति के गल्ती नैं हुईतस, न कि मोर ई सब रुढीवादी समाज के ओकर बाबा टेक लाल के गल्ती हो। ई सब अशिक्षा गवाँरपना से हो। 'यदि उ शिक्षित रहत त काकर महि बिगारक ते आपन छाई से ओजकर पठाईत ? यदि श्याममति शिक्षित रहत त पति पढलक कारण लेक काकर गड़बड़ मचाईत ?' ईहम मोर का गल्ती बा ? "शिक्षित नैं होक समाज के सेवा कर्ना मुश्किल पर्था।" जैसीन हुईलसे फे बनारस पढ नै जाक का छोड़बु। किरण आपन मनमन बुदबुदाए—जत्ती महीं ह छोड़क चल जाई त काहुई ? दुनिया जानोकीं क्याकर गल्ती बा, क्याकर दोष हो ! अत्रा बिचार कैक उ आपन दाई बाबक थे बनारस पढ जैंना सवाल उठाईल। किरण के ई बात सुनक ओकर दाई-बाबा ज्यादा दुःखित हो गैल। अत्रमत पतोहिया असीन करथ कलसे झन आब का दशा हुई कैक किरण हन सम्झाई लगल कि "पढ जिन जा छावा"—तब फेन किरण आपन दाई के बात नै मानक कापी, किताब के भरवा बनाक चलदेहलस।

३-४ महिनक बात हो घरम श्याममति ज्यादा अशान्ती मचाई लागल रह। कुई सम्हील से फे नै मस्रा। कभु आपन सास ससुरोकथे कह कि तुहिन नै बिग्राक का छोरम्। आपन घाँटीम डोरीया बाँधके तुहनक द्वारी म त मुअम। कभु आपन दाई, बाबा, दादुन से जाक कह कि–"महीं ह गैया ब्याच असक बेंच क खैलो पापीन् ! तुहन भारी पाप लागो ! मोर दुःख नै दयाख थुईतो पापीन ! तुहनक घरम आपन घ्याँचा बाँधक मुअम् ! थाह्र बा तुहन ?" श्यामपतिके अत्रा दुःखदाई बात सुनक ओकर दादु, भौजी, दाई, बाबा, नयन भर आँश लेक ह्यारत। कुहीकें मुँह ओर से एक शब्द फे नै अईलनु। एक घड़ो श्याममतिके दादु, भौजी हुक्र सम्झाई लगथ कि—"ऐसीन जीनकर बावु। घरम रनाजात रत्या त घरम रखती। त्वार दु:ख, सुख हेरुईया हम्र पली बती। ई सब टेकलाल एकठों कोनो म गाल पकड़क बैठक ओनाईतह। टेकलाल आपन छाव ह कहल कि–श्याममतिह सुफलाक झट्ट पठाओ। तब श्याममति ह सुफलाक पठैल।

४

५–६ महिनाके वात हो। किरण एक पत्र पाईल। उ पत्र ओकर बावा कर्ण बिर के रलहस। जौन पत्रम असीन लिखल रह।

प्रिय बाबू, किरण !

आशीर्वाद !

तोर पत्र नै अईलक बहुत दिन हो गैल। उह ओरसे तोर भैया, बावु, दाई पत्र पाइकते उत्सुक बात।

छावा ! जबसे तै बनारस पढ गैल्या तब से हमार घर अन्धकारम डुबल वात। करीया बद्री घेर राखल, जहोंर तहोंर गाढ़ कुहिरले घेर गैल ओर्से डगर नै देख परथ। त्वार दाई त्वार सन्झनाम खाना फे नै खाईत। तोर भैया बावु हुक्र—दादु कहाँ गैल ? कैह्या अहीं कैक सम्झना कर्थ। उह ओरसे ई पत्र पैतीकी तुरुन्त घर ऐना कोशिश करस बहुत नै लिख थुँ। लिख बेर फे आँश खसथा।

तोर शुभचिन्तक बावा

"कर्ण बिर"

किरण १० बजे कलेज गैल। कलेज के केन्द्र भितर का पुगलरह, कलेज के प्युन हाथम पत्र लेक आक कहल—"किरण बाबू, ई तपाईंको पत्र लिनोस !" किरण हाथम पत्र लेक कक्षाम प्रवेश करल। कलेज से आक ऊ पत्र ह्यारलागल। पत्र हेरतीर ओकर नयन अश्रुपूर्ण हो गैलस। लेकिन धैर्यवान, शिक्षित मनेरह। आपन रुवाईह जबरजस्ती बन्दकरल।

माघ महिना के वात हो १४ गते ई पत्र पाईल। ऊ समझलागल कि पत्रम असीन लिखल बात, ईह महिनक ६ गते से परीक्षा बात ! का करना हो ! किरण मनमन बिचार करल कि घर रथा, दाई वनवा रथ, भैया, बावुन रथ त सब चिज रथा। जाँच त असौं नैं देह सेकमत पोहर साल देल से फेन हो जाई। अत्रा बिचार कैक उ आपन साथीन से सक्कु हाल बताईल ओ विदा होक आपन घर ओर खाना हुईल। किरण साँझके ७ बजे गाड़ीम चीहुरल। दोश्र दिन ट्रकम ओ तिसर दिन त ऊ घर पहुँच गैल। किरण सक्कुन यथार्थ डण्डवत करल ओ ओकर भैया वावु हुक्र किरण हन ढोक लगल स। गाऊँ के साथीन से हाथ मिलेलस। श्याममति अचानक आक कहलागल—आपन मन परल लग्वार नै लै अनलहों ?

और रानी असक लग्वार लेन्ना सुन्थु त खै ? आब त तुहन के घरम मैं नी रना हो काहुँ। तोहार दाई बावाफे चलजा कथ। तोहार द्वारीम त मैं आत्महत्या करम। श्याममतिक अत्रा वात सुनक किरण श्याममति ह सम्झाई लागल। संझनासम सम्झाईल बिचारा ! लेकिन जोड़ नैं चल्लस। "बाघ, भालु, साँप आदि हन औषधीले बश म कर सेक्जाईथ लेकिन मुर्ख ह सम्झाए ओ वश म कर नै सेक्जाईथ।" अत्रा सोच्क किरण निराश होक चल आईलम बहुत मनै किरण हन दोसर भोज कर्ना सल्लाह देहल लेकिन किरण हुँकनक बात म नी ध्यान देह। का कर कि ऊ सुधारवादी बिचार धारा के मनै रह उस्वाच यदि मैं और भोज करम त दुनिया महीं का कहीं ? सुधारबादी प्रवृती धैक फेन असीन काम कर्ना उचित नै हो ! किरण के बहुत साथी रलह उ मध्य एक मात्र ओकर शुभचिन्तक श्री लाल रलहस। श्रीलाल असिन सल्लाह देह—"जस्तहें वाघ भालु संग लड़कते बन्दुक ओ सौपन वश म करकते (बेन) के जरुरत पर्था ओसतहेंक सम्झाक श्याममति ह बशम करपरल। श्याममति फेन त मनै हो। आज नै सम्झी कलसे काल सम्झी, काल नैं सम्झी त परीं सम्झी त परौं सम्झी ! साथी किरण ! हमेशा तु कोशीश करहो। किरण श्री लाल के पथ प्रदंशक बात हन शीरोधार्यं कैक श्यामभति हन सम्झैना कोशीश कर, बीचारा ! तब फे कुछु जोर नै लागस।

"मनैन बिगर्ना तमाम किसिम के शत्रु रथ ओ हुक्र अशोभनिय अफवाह फैलैथ जस्त कि सेमोक बौरा सुखाईकते चारो ओर से गाधी ध्यार असक" ! एक थो किरण के विशेकर नामक कक्षासाथी फे रलहस। विशेकर के मुँहम रामर ओ बगलीम छुरा रलहस। उ मित्र र किरणके काम से ज्यादा क्रोधीत रह उह ओर से इ किरण हन विगर्ना कोशीश करती रह। ईह समय म उही ह वड़ा मौका पाईल अस लगलस। उ स्वाँचलागल "मौका आईल म मौका गुमुईया बड़ा मूर्ख हो"। अत्रा बिचार कैक ऊ अभियान रच लागल। "मौका आईल म मौका गुमुईया बड़ा मुर्ख हो"। अत्रा बिचार कैक ऊ अभियान रच लागल। विशेसर एक शोषक ओ प्रतिक्रया वादी के लड़का रह। उह ओर से उ फेन प्रतिक्रयावादी ओ अवसर वादी रह।

एक दिन बिशेकर किरणके गाऊँ म आक किरण हन सिरवाईलागल साथी किरण ! तोहार स्थिति ओ नि हुईल अफवाह सुनक मैं आपन

आँश नैं रोक सेकतुँ। का कर कि महि ह जत्रा तोहार मैया लगथा ओत्रा और जनक मैया नि लागत। उह ओर से अपनह मैं एकथो सल्लाह देना चाहतुँ। मन्ना ओ नै मन्ना त अपनक म निर्भर बात। मोर सल्लाह असीन वा—तोहार जन्नी ज्यादा कातर, छोनार ओ उज्जण्ड स्वभाव के बात उह ओर्से अपन पारीवारीक सुख नी भोग सेकवो। अपन दोसर भोज कैली या त भागक बिदेश चल जाई। विशेकर के वात सुनक किरण हत ज्यादा चोट परलस। किरण बिशेकर हन कहलागत कि हेरी साथी बिशेकर जी। अपनक जसीन विद्वान, अनुभवी साथी पाक महीं गर्व बात तब फेन अपनक मुँह से असीम अशुभ बात सुनक मोर छाती फाटअस लागल। जब सम श्याममति बाचल रही तब सम मैं दोश्रा बिवाह नै करम ओ जब सम्म मोर जन्मभूमि नेपाल के अस्तित्व रहहोस तब सम मैं नेपाल देश ह तेजक बिदेश नी लगम्। और देशके मैं गुलाम बन नँ चहतुँ। चाहे लाखों शत्रु महि बिगारकते घेरा देहत, जस्त का सेमीक रुखोह सुखाईक ते गाँधी भौरा लागल रथ किरण के बात सुनक विशेकर चुप लाग गैल। दोश्रा दिन १२ जनन गुण्डन लेक किरण के गाऊँ आईल। उ बाहौं गुण्डावो पाली क पाला किरण ह सम्झैल लेकिन उ प्रतिक्रयावादीनके बात सुनक किरण गीत गाईथ। दुनियाम मोरसंग कोही नाही, रामतुहु एक वातो मनुष्य वनके भीर पथरक, दोल देखुईया तुहुवातो ईहरी भूमि म जनम लेहनु,

हरेदेशक हुईवु साथी

सपुत प्रमाण। वहीं जेवु, विदेश बिरान॥

ईह देश के पानी हेर ईह देश के वयलीयासे, प्रण के रखनु॥

हरे ईह देशक हुईकते कर्णधार, मैं जन्मनु।

साथी नं जैवु विदेश बिरान॥

दाक औ बावक मैया बा,।

देशक औ उद्देश्यक मैया बा,॥

नहीं जंवु साथी विदेश बिरान॥

उ १२ गुण्डन किरण के असीन गीत सुनक निराश होक और षडयन्त्र रचलगल। तेश्रा दिन, किरणहन घोराही गैलक मौका पारक विशेकर किरण के घर आक नै हुईलक-हुईलक चोब्ली लगादेहल। विशेकर के

बात सुनक कर्णबिर आगी बनल। ऊ कहलागत कि ई किरण्या गधा। तैं घरम रहीत का हुई हमार। यक कारण से हमार घर असीन हो रहल। पढक आपन दाई बाबा हन सुख दी कलक त झन असीन हुई लागल। एक ओर जन्नी गाल फुलैले बतस। आज आई त गय नीक्राक का छोरम। कति कर्णबिर गर्जलागल पापी विशेकर जुन मनमन स्वाँच कि आब म्वार षडयन्त्र सफल हुई लागल कैक खुशी हुई ती घर लागल।

भरखर साँझक ४ बजल रह किरण आपन अँगनम ठीक बैठरलह कि ओकर दाई बाबा बरबरैती घरम से निकरल। कर्णबिर कह लागल किरण हन—किरन्या। तैं पढव्या त हमनं सुख देव्या कैख कसिन दुःख कैक पढँनु त आब तैं असिन सोचल्या गधा। भाग म्वार घरम काकर अईल्या? बिचारा निर्दोष किरण, असीन बात सुन्ती की अश्रुधारा बहलगलस ओकर आखीम से। दाईबावा हन कुछु वात सम्झाऊ कल से ओकर मुँह ओरसे बातक सट्टा रुवाई आईस बिचारक। दिन भरक भुखाईल, अँटयाईल मनै झन घर आक ओसीन बात सुनल त बड़ी निराश लगलस। किरण रात क नैं सुत स्याकल काकर कि उही ह बड़ा घत परल रलहस कि ओकर बाबा बिना वुझल, सुन्ल ओसीक कल ओ किरण ओठहें कलम, कापी लेक कविता बनाए लागगील।

गाऊँ घुम्नु दुनिया घुम्नु, सक्कु चीज देख्नु

बाबा देख्नु सक्कुन के लेकिन असिन नी देख्नु। ओ किरण स्वाँच लागल ईहम दाई बाबाकदोष नै हो। ई षडयन्त्र टेकलाल ओ वह १२ गुण्डाओं न के हो।

जब रातके बार बजल सब मनै निन्द्रा देबीके क्वाखम ढनमनैल तब किरण आपन आई० ए० (इन्टरमिडीयेट) के कीताब लेहल ओ घरम से निकरल, शायद कभुनी अईना कैख।

जहोंर तहोंर सुनसान रह खाली गाऊँ के दरुवीन और एक थो फे हुरीया फ्याहु-फ्याहु बासतह, तेहुँम फे किरण चोर असक डरैती जाईतह कि कहुँ कौनो मनै देख ना लेहत। लेकिन उब्याला दुनिया के सबसे चलाक चौकीदार वाहेक कुई नै दयाखतह। ई अपार संसारम किरण के दुःख, हृदय के व्यथा देखुईया कुई नै रह। खाली आकाश के तारा हुक

किरण के विपत्ति म आपन आँख चीम चीन पार्क कहोरे आँश ले गरिईती जाई बेर किरण ह आपन साथी श्री लाल के सम्झना अईलस त पत्थर म ई गीत कोखँ गैल ।

मैं बिग्रनु साथी, बिग्रल मोर घर !
मैं केल नाही, बिग्रलो तुहर फे ॥

तुहर नै बिग्रलो साथी, बिग्रल समाज केल नाहीं, बिग्रल विश्व संसार तब्र दोश्र किरण काजन कहा गैल ? कुहीह थाहनै हुईल कि कहाँ बैठल बा कैक ?

१-२ महिना के वात हो, ज्याकर घरम मनैनके भिड़ लागल रहस आब ओकर घरम एक थो कुकुर फे नै आए। एक ओर श्याममति फे भगना डगर हेरतो रह। "जत्रा" कठोर हृदय हुईल से आपन सन्तान ह के बिसराई सेक्था। आखीर उ फे एक थो आपन अंग हो।" जब किरण निकरक गईगैल त ओकर दाई बाबा समझत कि काकर हम्र आपन छाओ ह निकार देली ? "क्रोध कर्ना असल बान नै हो। क्रोध ओ घमण्ड मनैन ह आध बढना से रोक्थाः।" कर्णबिर बल्ल बुझल कि किरण निर्दोष रहकैक ! ई सब बिशेकर के बनौटी चुगली हो कैक। आब कर्णबिर आपन भुल महशुश कैक आपन जिन्दगीह धिक्कार लागल। कर्णबिर के शान आध जौन रलहस उ शान आज नै हो एक थो ५ वर्षक लड़का फे नै पत्यै तस। जबसे किरण घर छोरल तबसे कर्णबिर के घरम सब चिजके कमि हुईलगलस। सुस्त सुस्त ऊ कंगाल हुईती जाईलागल। आब कर्णबिर ज्यादा गरीब हो गैल। श्याममति फे भागुँ कि नी भागु कना बिचार कर्ती रह। तब फेन श्याममति और कौनो निष्कर्ष नी भेटाई स्याकल। श्याममति आब ई अपार संसार से सद्ध भरीक लाग बिदा हुईता बात स्वाँच लागल।

रात के १२ बजल रह। गाउँ भर सुनसान रह। श्याममति चुपचाप उठक आपन लैहयर और प्रस्थान करल। ऊ जब आपन लैहेर पुगल त एक थो डोरी लेक आपन ध्याँचा कसक द्वारीम झुलल। एक घरी पाछ ऊ किक किक करती यमराज के पहुनो बन गैगील। "ओहो ! ई अपार संसार फे कत्रा मतलबी बा ? ई संसार म अमृत से ज्यादा वीपक गगरी भरल बात !"

जब विहान हुईल। सक्कु उँहर चहल पहल हुई लागल। जारक महिना हुईल ओरसे सूर्योदय से आध कुई नै अंगनम निकर्ल। जब सूर्यदेव चारो ओर लाली का फैलैले कर्णदेव ओ ओकर पतोहिया घाम तापकते अंगनम आईलगल त देखल श्याममति ह। जीतीह बनाक टेकलाल के पतोहया कहल-काहाँ ऐलो नानी ? अत्रा विहान ! बिचारी श्याममति जीतीह हुईलसे पो चाल कर ! ऊ त और देशम यमराज के पहुना बनगैतरलहया। श्याममति नै बोलल त काकरनो बोल थुईती ? कैक भन्सरी जगायगैल त झन थनथनेना आंङ्ग भेटाईल त उप्पर मुन्टा उठाईल त देखल घेवाम डौरिया ओ उप्पर बाँधल। भन्सरी चिल्लाईल एदै बाबा ! नानी त डौरिया बाँधक झुलल बाती ! भन्सरीक असीन शब्द सुनक सल घरक मनै उठगीक। घर भर हल्ला मचगैल। जब बिहान हुईल चारो तरफ हल्ला मचगैल कि टेकलाल के छाई श्याममति आपन लैहेरम डौरिया ध्याँचम बांधक, झुलक मुलीन्। पहिल त पञ्चायतम सरजीमीन हुईल। गाँऊ पञ्चायतम नीपटाएनैसेकना केस (मुद्दा) हुईल ओरसे तुरुन्त पुलिस थानाम रीपोर्ट (उजुर) कैल। पुलीस इनीस्पेक्टर ओ चारजन पुलीस आगल। गाऊँ भरीक मनै डरैती बात बत्वाईत। सब सरजीमीन ईनीस्पेक्टर बुझल। ई सब दोषो श्याममतिके बावा टेकलाल ठहरल। ईनीस्पेक्टरके निर्णयानुसार टेकलालके सारा चल अचल सम्पत्ति सरकारके हुईलस। टेकलालके आबज्यादा गरीब, कंगाल हो गैल। "आपन खानलक कुँवाम अपनहे बुर मुअक ते परल।" रानपासके मने भलाहीं खाई लगल कि-बल्ल थाह पाईल गया ? सारा मनैन सताय टेकलाल हरामी ! कैरव कह लगल। आब टेकलाल ठीक ओसहें हो गैल जसहें कि एकथो खौराहा कुका रया। आब टेकलालके साथ एकथो मुल्व', टुपी निकरल टोपी ओ हातके अंगोछा बाहेक कुछु नै रहगैलस।

उहर किरण काहीं बा ? कुछु थाह नै हो ? ईहर श्याममति आपन आत्महत्या कै दारल ? ईहोर कर्णविर ज्यादा गरीब हो गैल ? उहोर टेकलाल खौराहा कुका अस हो गैल ?

ईसब दोष केही लगैना हो त ?
मूख्य दोषी त रूढ़ीवादी समाज हो ?
दोश्रा दोषी टेकलाक हो ?
तेश्रा दोषी रामु चौधरीया हो ?

चौथा दोषी विशेकर हो ?

रूढ़ीवादी समाज ओ ई मारजन प्रतिक्रियावादीन धिक्कार ! धिक्कार ! धिक्कार ! ओ साथ-साथ असीन विचारधारा रखना ओ गरीब हुन शोषण कर्ना हुन् ।

धिक्कार ! धिक्कार !! धिक्कार !!!

रचनाकार

टेकबहादुर चौधरी

(पूर्व दाङ) सीसनिया

हमार लक्ष

फूलमान चौधरी

सुनो सुनो दाऊ भैयो हमार कहाई,
हम्र फे आब हमार समाज आग बढाई ।
सक्कुमनै आघ बढल पाछ हुइलो हम्र,
पढी लिखी चतुर बनी बिकाश करी हम्र ।
सक्कुजान आपन-आपन लड्का लड्की पढाई,
तब हमार समाजम बहुत हुई भलाई ।
बिना हम्र कम्मर कस्ल काम नहीं बनी,
हमार खुन चुस्के मनै बन्लबाट धनी ।
पुरान रिति छोड़ी हम्र तब बनी काम,
नौव-नौव रिति बनाई तब पुगि माम ।
दुनिया भरिक किसान बाट हमार पक्ष,
देशबिकाश, समाजसुधार बाट हमार लक्ष ।

———

मानव में

(कालीराम चौधरी देऊखुरी मानपुर)

❀

दुनियामें अइली, नै रहबी ओस्ते-
काम करबी वेशक लाग ।
सुकर्म करबो, फूल फूलैबो,
देशहे बनैबी ॥ १ ॥
कुपथ छोडबी, सुपथ लगबी,
सुग्घरमें नेङ्बी ।
सुग्घर बनैबी मन घन आपन,
दाइक सेवामें ॥ २ ॥
मनके कोइला, ओहि पन्छैबो,
लनबी भोजरार ।
मनके फूला, बहरो लनबो,
भरबी सुबास ॥ ३ ॥
एक दिन्के चोला, दश दिन्के हेल्हा,
नै जैबो ओहोर ।
जय ! जय ! नेपाल, जय ! जय ! भाषा,
करम चढैबी ॥ ४ ॥
नै हो दिन काल न बिन परो,
आझुकिल दिन वा ।
काटा ओर जाई ऊ मनै आज,
पाछे जे पछताई ॥ ५ ॥

गाऊ-फर्क आइल

टेकबहादुर चौधरी
(दाङ् गहिरा गाऊ)

गाऊक मनेन चतुर बनैना गाऊ फर्क के देल रज्वात !
गाऊ-गाऊम रज्वा-मंत्री, कर्मचारी ऐल,
गाऊक मनै आपन दुख्ख कहां कह पैल ?
पंचायती राजम गाऊ फर्क पैली,
गरीब दुःखी सक्कु मनै कहां निसाब पैली ?

गाऊक मनै..रज्वात।

गाऊ-गाऊम पंच बैठल पञ्चनके सरकार,
झगड़ा-झाटी पन्जर छोरी करो काम हमार,
झगड़ा कैक नेपालम प्रजातन्त्र अन्ल,
हमार देशक लाटा गन्जा कहां निशाब पैल ?

गाऊक मनै..रज्वात।

हमार राजा बिचार कैक गाऊ फर्क देल,
गाऊ बैठल लुच्चा जाली आब मौका पैल,
पहिल कथ पंचायत, झगड़ा छिन्थी यहो,
दोसर पैली गाऊफर्क तर्फे, दुख पैली

गाऊक मनै..रज्वात।

पहाड़ फोरली डगर कोर्ली सक्कु मिली-मिली
साइकिल, अन्ल मोटर अन्ल देख्ली झिली-मिली
कुरहार टुटल, मुन्हार टुटल फरुवा टुटल हमार
एक्क दिन्म पुग्थ हुँक्र कोयलाबास बजार।

गाऊक मनै..रज्वात।

यी म्वारम जीम्मा बा

विश्वराज गोचाली
(हापुर बिजौरी दाङ्)

जनम लेनुसै,
छिटी-मिटी झोप्रीम
एक्थो संर्णको जाती म
जहा प्रगतिक नाउ नै हो
आपन जातीक ज्ञान नै हो
बढनु मै चिङ्गनी मुगिक छौना से
खेल्नु मै भेरी-छेग्रीक जगालम
कुछ ज्ञान सिख्नु मै बर्धन से
और नेतृत्व कनु मै
फहवा व हरह
पैनु नाऊ मै त
शोशक बाजेन्से
ए ! मुसा, मुसा ! मुसा !
तुम्हक चाल मै देखती बाटु
हमार जातीम अन्याय देख्ती बाटु
समाजम अन्याय देख्ती बाटु,
और मोर हेलंक किताबसे
मै तुलना कर्ति बाटु
रुषक जार व हमार बाज्या
वह वसँ
म्वारलाग एक्थो पीर नै हो
काकर कि
सामाजिक परिवर्तनम्,
देशक बिकाशम
शोषक बाज्यक बिरोधम,
हमार जैसिन आतिक चाह बा
आब त गोचाली
शोषण के विरोध कर्ना
हमार जातोक काम बा
यी जातीम परिवर्तन लन्ना
एक्थोर म्वारम जिम्मा बा।

"कभु असीन फे हुई था ?"

राजेन्द्र कुमार चौधरी (हेक्ली दाङ्ग)

❀

कारागार सक्कु ओर अंधारके साम्राज्य रह । खाली बन्दी गृहके आध केल बत्तिक तेज प्रकाश फैलल रहल । पुलोस हुक्र सतर्क से उहर आईल रलह ओ चौकीदारी कर तलह । जारक महिना फेन रह । कारागार (जेल) के भित्तर बन्दी हुक्र आपन आपन ठाऊँम बैठल रलह । बन्दीगृह के निरीक्षक जिवन सतर्कता से ईहोंर उहोर घुम तलह । ओठ बैठल एकथो अफीसर कहल-जिवन ! असीन जाड़म ओ अंधारम कौन मूर्ख बन्दी निकरी ? जाई आब विसाई जिवन उत्तर दहेल - नाहीं सर ! इहम राजद्रोही फेन त बात । ओ ई फे थाह हुईल बात हो कि हुँकनक साथी आपन ज्यानम खेलक फे हींकन छुटैना कोशीश करती बात ! " अफशोष ! चाँदो ओ स्वानक छैहेम बैठल मनै आपन झेंप मेटाईकके ओ आपन बातह सद्भर आव कराईक ते सदा भर ईह एक शब्द के ईस्तेमाल कर्थ । जब मनै आपन अधिकार मागथ, भुख ओ बेकारी क रूईना रूई थ त उही ह कम्युनिष्ट कैख समाज से हटैना कोशीश कर्थ । केवल नाऊँ बदलक बस्तुनी बदल जाईथ ओस्तहेंक भुखा हन भुखाहा नी कैक कम्युनिष्ट कलसे खास परीवर्तन नी हो जाईत !"

एक घरी पाछ जीवन एकथो राजद्रोही बन्दीक सामुन्ने जाख पुछल- बन्दी ! तुहीन नींद नी आईथो ? बन्दीक अनुहार एकदम गम्भिर हो गैलस बन्दी कहलस-जिवन आब त महीं बहुत नम्मा निंद लेह परना बा स्वाचतु कि एकथो बात के दारूँ ! किरण उत्सुक होक पुछल कहो ! का पुछतो ? निर्भय होक पुछो ?

बन्दी कह लागल - जिवन ! मैं एकथो मजदुरन के नेता हुईतुं । मैं ई दुखी, शोषीत किसान तथा मजदुरनके आवाज सुन रखतु ओ हींकन के दुख देख रखतु । यदि मैं मुअवेर एक चो केल आपन मजदुर भाईन से भेंट कर पैतु त महींह बड़ा खुशी लागत ओ महीह आपन देश के प्रति अगाध प्रेम बात । हमार उप्पर आपन मातृभूमिके भार असीन

उरुस व बाघ

रुपमान चौधरी पकोई (दाङ्)

एक शत्रु उरुस,
जे तरल रगत पियथ,
चुहकथ, रगत घुदुर-घुदुर,
आत्म नै मुअतसाम नै छ्वारत ।

× × ×

बाघक आहार बबुरा जीव जन्तु,
जेकर बिगार नैहो कुछु,
आपन कर्ना आपन खैना,
बिचारनुह तबफेन अकालम मर्ना,
ऐसिन अन्याय, अत्याचार देखती-देखी,
बपुरा जिब जन्तुन्म जागृती नै ऐना ।
ऐसिन अन्याय अत्याचार देखती-देखी,
कुछ नै कर्नां कहासम के मुअल दिल हो ।

परल बात कि आपन देशक लाग मुअँ बेर एकघरी नै हिचकीचैवी ! ई बात सुनक किरणह झस्कल अस लगलस ।

जिवनक मनम शान्तो नै हुईतस, भुख, प्यास नी हुईतस । जिवन स्वाँच कि "आमीन सम मैं एक थो अदृश्य कन्या पदंक पाछ बैठल रनहुँ ।" जिवनक मनम एकदम क्रान्ती हुईलस ।

"क्रान्ती एक असीन चीज हो । जौन जिवनक डगरह बदल देथा । ईहम एक प्रकारक अदभुत ओ अदृश्य शक्ती रथा " जिवन सोच कि "ऊ दुई क्रान्तीकारी तथा क्रान्तीकारीणी के मुस्कान फाँसीक तख्ताम चौढ क फे नै अदृश्य हुईलन ।

ऊ युवक प्रदिप ।।
ऊ युवति निलिमा ।।
ज्याकर जवानोक फूलनी फूलक
कुलमुला गैलन् । अफशोष ।।

परिश्रम

—अरविन्द चौधरी सतगौवाँ

देउखुरी मदेरीया

हुइना ते आज के वैज्ञानिक युग में मनैन के बहुत से सुख सुविधा मिल लें कल बा तबो पर इ वैज्ञानिक युग में फेन-परिश्रम के बड़ा भारी ठाउँ बा। बिना परिश्रम के संसार के छोट से छोट चीज फेन मिले सेकना कर्रा बा। बहुत से मनैन के मनमें इ घमण्ड रहथ कि मै तें बड़ा धनी बतु मै आपन मनके मुताबीक चीज बस्तु औं संसार के सुख भोग बेगर परिश्रम से पाइ सेकम। पैसा हुइले से कौन चीज मीले नै सेकना बात बा अर्थात जौन चीज फेन मिले सेकी। लेकिन बिना परिश्रम के खाली पैसाले किल मिलना मुश्किल बा। उहे किमिम से कोइ कोइ ई फेन सोचत हुइहीं कि मै ते वडा बडा भागदार बतुँ आपन भाग से जौन चीज फेन मैं पाइ सेकम लेकिन परिश्रम बिना कैले भागले किल पाइ सेकना ढोग पोटना बुद्धिमानी नै हो। बहुत से मनै परिश्रम करले से काम सफल हुइथ कहीं के परिश्रम करथा लेकिन कौनो अचंन परती की जुरते छोर देथाँ। ऐसीन कैना भारी भूल हो। लगनशोल और क्रियाशील होके परिश्रम करती रहना हो कले से सफलता मिले नै सेकना बाते नैं हो। आपन चाहल जैसीन सुख सुविधा जरूर मिली। येमने कौनो शंका मन्ना बात नैं हो।

परिश्रम से साँसारीक सुख भोग कील नै मिलथ बलकी परिश्रम से और जनक भलाई हुइना काम फेन हुइथ। परिश्रम एक ऐसीन साधन हो जो कि आपन भलाईक साथ-साथ औरनके फेन भलाई हुईना काम हुइथ परिश्रम में एक ऐसीन वडा जादुबा जो कि भारी-भारी परिवर्तन फें हुइ सेकथ। संसार के इतिहास के चेहरा बदल देना जांगर परिश्रम में बा। ई हे फुरे परिश्रम के फल स्वरूप आज संसार के बडा से वडा और छोट से छोट देश के जनता भारी-भारी शोसन अत्याचार से उमुक के वाहर

छुटकर मदान म आके सुख और शान्तिक साँस फेरना मौका पैले बताँ। उदाहरण के लाग सबसे पहिले हमरे अपने देश के दशा ली।

छोट से बर पढल से नै पढल मनै तक बतैथा कि आज से २१-२२ वर्ष पहिले यानी सात साल पहिले हमार देश नेपालम राणा लोगन के हाथ में रहे। राजा शासन वडा निरंकुश और निर्दयी रहे। जनतन पर तमाम किसीम के अन्याय और अत्याचार हुइथ रहे। गरीव मनैनका पशु जैसीन कराइल जाइत रहे। लेकिन सात साल के नेपाल और आज के नेपालमें बहुत बड़ा अन्तर वा हम्र सकुजाने स्वतन्त्र और सुखी बती। ई सब कारण हमार देश भक्ती शहीद और बीर लोगन के परिश्रम से हुइल हो सायद हमार अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री, गंगालाल, धर्म भक्त दशरथ चन्द और राष्ट्रपिता श्री ५ त्रिभुवन के सच्चा परिश्रम नै हुइल रहत कले से आज फेन हम्रे उहे पुराने अवस्था में रती। हम्रहीन और हमार सन्तान का अतना स्वतन्त्रता और सुखी हुइना मौका मुस्किल से मिलने रहे। हमारे देश के जैसीन रूस के फेन खराब दशा रहे। रूसमें अन्याय से भरल जार शासन रहे जनतन् के उपर तमाम से अत्याचार और अन्याय के पानी वरषत रहें। दुःख और अनिकाल के गन्ती नै रहे। लेकिन जन सेकि लेलीन जैसी त परिश्रम और बुद्धिमान मनैक कोसोस और परिश्रमसे रूसके इतिहास के चेहरा बदल गैल। अब रूस के जनता सुख और शान्ती से आपन देश के सेवा करे सेकला। आपन परिश्रम के फलस्वरूप लावा-लावा निर्माण करती जाइत बताँ। और परिश्रम से संसार में पहिला स्थान पाइसेकता। भारत देश फेन अंग्रेजन के कब्जा में तमाम किसिम के अपमान सहल। बाद में महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू और बहुत से देशभक्त लोगन के कर्रा परिश्रम से मुक्ती पाइ सेकल। आपन देश के इतिहास में लावा परिवर्तन लाने सेकना ओइत के फुरे परिश्रम से हो। चीन देश जो आज मै हूँ कहता ओकर दशा फेन हमार देश के दशा से कौनो मजबुत दशा नै रहीस। ओहा फेन धनि लोग गरीबके उपर जौन शोसन और अत्याचार करीत उ कही के नै ओराइ। वैसीन अन्याय अत्याचार फेन माओत्सेतुङ्गके अध्यक्षता में लाल सेनाक सच्चा परिश्रमके आगे ठाढ़ रहे नै सेकल। सही और सच्चा परिश्रम हुइलक ओर से चीनमें फेन नयाँ परिवर्तन ऐना कर लागल। ऐसीन औरे-औरे फेन बहुत से देश रहे और देशके सच्चा लड़-

कन्के सच्चा परिश्रमसे मुक्त हुई सेकल और आनन्दके तलवामें डूब्बी मरना मौका पाइ सेकला। देश भक्त लोगनके परिश्रममें जौन परिवर्तन हुइल उ परिवर्तन हो देश स्वतन्त्र।

परिश्रममें देश स्वतन्त्र केना जाँगर कील नै हो बल्की परिश्रममें भारी-भारी निर्माण करे सेकना शक्ति फेन बा। संसारमें बड़े अचम्म-अचम्म निर्माण परिश्रमके करामातसे हुइ सेकल बा। एक-एक मनैनके परिमश्रसे तरे उँपर कब्जा हो सेकल बा। वड़े-बड़े विमान पानी जहाज और रेल गाड़ीक आविस्कार हो के संसारके हरेक क्षेत्रमें बड़े-बड़े परिवर्तन हो सेकल बा। आकाशमें चन्द्रलोकसे लेके पाताल तकके छान बिन हो सेकल। बड़े-बढ़े कारखाना बड़े-बड़े पुलके निर्माण हुइल बा जीही देखके दिमाग काम करना छोर देहय। यी सब परिश्रमसे हुइ सेकल बा।

परिश्रमसे भारी-भारी विमान, जहाज और कल कारखान कील बने नै सेकल बल्की हमार सामने भारी-भारी साहित्यक विकाश फेन होके सेकल बा। हम्रे आपन आखिसे देखती बड़े-बड़े धार्मिक ग्रन्थ, बेद पुराण के पोथा। साहित्यके बड़े-बड़े पोथा छापके हमार आगे मोजुद बा। ई सब हो परिश्रमके किस्मत। यदि विद्वान लोग अतना लगनशील होके परिश्रम नै कै देले हुइता तै इ सब हम्रे कहाँ पाइ सेकती। हम्र खाली जंगली अवस्था बाहेक और कौनो अवस्था में जाइ नै सेकती। लेकिन हमार विद्वान लोग आपन दिमागके परिश्रमसे साहित्यके निर्माण कै के हमार आँख खोल देला। उहे शिक्षासे जौन हमरे परिश्रम करना पाठ सिखली और उहें परिश्रमसे हमरे आपन स्थान उपर उठैती लाने सेकले बती।

परिश्रम करना छोट बड़ा सबके लाग बराबर बराबर बा। ई बात नै हो कि वडा मनैनका कम परिश्रम करना और छोट मनैनका ढेर। परिश्रम अनुसार के फल दुनु जनहैन आवश्य मिलि। ई बात फेन कना नै हो कि बड़ा मनै परिश्रम कैलेसे वड़ा काम करे सेकना और छोट मनै परिश्रम कैलेसे छोट काम। मै छोट बतुँ गरीव बतुँ भारी-भारी काम करे नै सेकम कना और करना में हीचकीचैना बडा गलती हो। संसारमें भारी-भारी काम करुइया मनैका छोट नै रहीत ? का कोइ गरीब नै रहीत ? जरूर रहीत खुला दिलसे कहे सेक जाइ। लेकीन ओनमें लगनशीलता रहीन और परिश्रमी रहीत। न्यूटन नामक बैज्ञानिक उँपरसे फल गीरत देखके गीरलक

थारु किसान बिग्रलक कारण व सुधर्ना उपाय

लेखक :— महेश चौधरिया, (दाङ्)

हमार देश नेपालके तराई व भित्रि मधेशम पूर्ब मेचिसे पश्चिम महाकालिसम षासकैक थारु जातिन्के बस्ति बात, ज्याकर अनुमानित जनसंख्या ३५ लाष बात। ई जाति नेपालम सबसे गवार बात। याकरम न कौनो किसिमके चेतना ऐलहो ना कौनो किसिम के सभ्यता। यह जातिके कारण नेपालकें सब किसानके भविष्य मज्जा देष्ति-देष्त हाथम हाथ, कन्धेम कन्ध्या मिलाक न्याङ्गनै जान्क सारा नेपाल देशके किसानके प्रकासमय भबिस्यह आन्धर बनादेल बात।

कौनोफे चिजके उत्थान हुइलसे पतन फेन अवस्य हुइय, बच्चा जन्म लेहथ त मुवतफेन, वस्तहक आँजकाल याकर पतन होरलिस। आन्धर-बाटि नै देष्ति आपन सङ्ग व सहि डग्गर, कुज बाटि नै जन्ति पैलासार, लुलबाटि नै सेक्ति कर, गन्जा बाटि नै जन्ति षाय व सहि डगर छुट्याय। आव नेपालके सब किसान मिलि यहिह डगर लगादि अज्रार वर, आँष षोल्क देषादि याकर बिग्रलक कारण ह काकरीक इ फेन एक्थोर भैया हो एक्क दाईके, इफेन एक्थोर किसान हो और किसान के अस्तह, इ फेन रुइता दूध नै पाक। जस्तहक तराई नेपाल के एक्थोर हिस्सा हो वस्तहक थारु किसान फेन नेपालक किसान के एक अंग हो। याकर आङ्गम नाना प्रकार के धिनलक्टिक चिज लागल बात। यहिह लहैना कला सिषाक आपन पाछ लगैना प्रत्यक नेपालि किसान के सामने ई समस्या ठहन्याइल बा। का एक्थोर आङ्गम भर बरि चम्कना गहना लगाक आकुर आङ्गम हिला प्वाटल बात कलसे वहिह सभ्य कना हो ? का थारु किसान छोकं नेपाल के और किसान सुषि हो गैलसे नेपाल के किसान सुषि बात कना त ? कदापि नहि काकर कि प्रत्यक किसान के समस्यानै नेपालि

५

किसान्के समस्या हो। वहम् थारु किसान के जनसंख्या फेन बहुत बात, अन्याय व अत्याचार याकमें झन ज्यादा लादल बात। वहवसें इ समयम यहिह सुधार्क और किसान के दाजोम लैजैना प्रत्यक नेपालिके कर्तव्य बात। हम्र बिग्रली कैक रुइपर्ना नैहो बल्कि ई समयम का कर बिग्रलि व कसिक सुधारि कैक स्वाच पर्ना बात? जस्तहक एक्थोर अंग्रेजि बिद्वान 'एला व्हिलर विलकास्क्स' लिप रख्ल :—

अप्न निसानाम चूक् रली ?
का हुइल लक्ष्य त आब फे चम्कति बा ?
अप्न दौर म पछुगुर गैलि ?
का हुईल सास लेली
ताकि फेर दौर म भाग ले स्याकि।'

बहवसँ हमन फे का होरहलत? सुधर्ना समय, सदा धुला बात। एक घनि बिसालि काकरकि हमन सफलता के छ सिढि ऊपर चिहुर पर्ना बात।

जौन सिढि निम्न लिखित बात :—

(१) संगठन (२) भोग - बिलास
(३) थारु - भासा बिकास (४) सिक्षा
(५) गरिबि (६) राजनैतिक चेतना

(१) संगठन :—हम्र थारु किसानम संगठनकना चिजन्ते थाहा हो। हुइतात समाज फेन व्यक्ति के समूह हो लेकिन हमार समाज संगठित हुइल बात पालि पायक लाग व बस्यारा पारकलाग नकि करकलाग। यदि हम्र थारु समाजम नजर लगाई त देख्बि कि षासकैक थारु समाजम नै संयुक परिवार व बरि-बरि गाऊ बैठल पैबि उप्रसे देख्लसें बहुत भारी संगठन बाट कनासक लेकिन आपस-आपसम फुट व कोनी मिसिम्के मेल नहि। कौनो काथि मै महतावा, कौनो कथि मैं गुरवा त कौनो कथि मैं जिम्दरवा सब आपन आपन वसें बर बन्थि, दुनियासे मत्लब नै रथ्थी, पडोसिह दुष्य पर्लसे नै दयाषलसक कथि यात भलाहि पैथी, पारस्परिक सहयोग के अर्थ नै बुझ्थी, एक्क मुठ होक आपन भलाईम कामकर नै जन्ति काकरकि संगठनकना शक्तिह नै बुझ सेक्क इक्हले इक्हले होक सारा छिया - छिया हुइल बाटि। चाहे पिस्ना सिमा जचा नांघ गैलसेफेन

वाकर विरुद्ध कुछ करतका कहफे नै सेक्थि काकर कि हम्र सम्झथि अप्नह इक्हले। इ समयम थारु किसा नह 'एकँके लट्ठि सँके बोझ' कना चिज सिषाई पर्ना बात व इफेंन चिनाई पर्नाबात कि नेपाल्के और किसानकेल नहि बल्कि दुनियाके किसान त्वार सङ्ग हुइत व त्वार सहायता के लाग हुक्र तत्पर बाट कैंक।

पिस्ना सिमा नाङ्घगैल हम्र चुप लागल बाटि हाथ थाम्क, संगठनके नाऊनै लैक बल्कि हजुर-हजुर कैक। संगठन नै ऐसिन चिज हो जौन कैसिनसे कैसिन, कठिनसे-कठिन काम कर स्याकथ कैसिनसे-कैसिन भारि पहाडह फ्वार स्याकथ, कैसिनसे-कैसिन नदि के बाढह बान्ध स्याकथ कलसे वत्र आपन शत्रुह फोर्ना या मस्ना कौन भारि बात हो यदि सबज एक्क मुठ हो गैलसे। जाबो वत्र पात्तिर एक एकथोर बन्कस मिलाक भारि से भारि जानवर बाध जैथ, जाबो वत्र छोटि-छोटि सिना माटिक दिवार उठादर्थ त हम्र तछान मानव हुइति, करक लाग हाथ पारष्लि, एकठावासे और ठावा जाइकलाग ग्वारा, सुन्नाकान, सोच्ना बिबेक बुद्धि पारष्लि, पारस्परिक सहयोग के लाग समाजम बैठरलि तफेन मे इ प्रश्न कर्तुकि हम्र वत्रा-वत्रा भारि गाऊ व परिवार बनाक काकर बैठल बाटि? यहिसे त इक्हले घर बनाक बैठल बढिया। आँज एक्थोर व्यक्ति से लेकर विस्वसम एक्थोर संगठनरुपि मालाम गुठ जाइता।

संगठन त हर प्राणिम बात लेकिन अत्र फरक बात, जाग्रित व सुप्त। का हम्र गोरुक बगालह व बन्दरके बगालह संगठिस बगाल नै कना हो? का मधन्के बगालह चेतनशिल बगाल नै कना हो? कना हो काकरकि मध आपन सम्पत्ति व श्रम (कमाहिके) बचाऊ के लाग शत्रुन्केस आक्रमण कर्थं चाहे ऊ कत्रा भारि ह्वाय न, हुक्र स्वर्गिय सुष लुट्ल रथ संगठन के बल्से, चाहे ऊ कत्रा कठिन काम ह्वायन। और फेन पृथ्बिम बहुत ऐसिन ऐसिनबाट जौन आपन शत्रुन्ह ध्वस्त पार्क सुष लुटल बाट चाहेऊ कत्रहो सत्ताधारि ह्वायन लेकिन हम्र थारु किसान मानव च्वाला पाकफेन कुच्छु कर नै सेक्ल हुई। हमारथें संगठनत्राट लेकिन पसुसक सुप्त। हम्र पसु वल्लि, पसु मनै वन्ल, आत्र गोचालि हुक्र आब्से हम्रफे मनै बन सिषि, संगठनके डौरि प्रत्यक मनैनम ज्वार सिषि व आपन दुष्य व भलाईन जौन फे कर स्याको। 'भाई फुटे गवार लुटे'

कना चिज सक्कुन थाह् हुई। हमन भाई-भाई म फुट ल्यान्क मज्जा लुट्लक अप्न हुक्र देष्ति बाति।

(२) भोग-विलास :—भोग बिलास नै उन्नतिके महान शत्रु हो। एक्थोर बिलासि मनै आपन लाग और जनकलाग व देशके लाग का करस्याकथ? सारा आपन समयह बिलासिताम लगा देहथ। षास कैक हमार समाजम इ चिज बहुत आग्घ बढल बात। हम्र कुच्छु नै सम्झति कि हम्र कहोर जाइति। मानव चेतनसिल प्राणि हो, ऊ इ प्रिथिविम जन्मलेरापल कुछ करक लाग न कि पृथिविके भार बनक लाग। ऊ जन्म लेलहबाट मज्जा काम करक लाग नकि हुरार बनकलाग। एक्थोर बिलासि मनै और कुच्छु नै सम्झथ षाली स्वानक चिरैय सम्झथ्, बहतर्से भोग-बिलासफेन हमार डगरम काट बन्क ग्वारम गरल बाट व आग्घ जाइनै देहथो। ई समयम ई काटह फाक्क कर्तव्यपरायण हुइना प्रत्यक गोचालिके कर्तव्य बात।

(३) थारु-भासा बिकास :—सोसण मध्य भासाके सोसण सब्से षतरनाक सोसण हो, काकरकि एक्थोर बच्चा पहिल दूध षाक जियथ नकि भात षाक। वस्तहक कौनोफेन जातिके जातिय भाषा वाकरलाग दूध जैसिन हो। जस्तहक एक्थोर बच्चा दूधनै पाक मुअथ वस्तहक हम्र थारु जाति थारु भासा नै पाक सक्के आत्मा दबल बात चेतना नै ऐल हो। म्वार कहाइक मतलब इ नै होकि जातिय भासा यानिकि थारु भासाहकेल आग्घ बढैना व यहिहकेल ग्राह्यता देना कैक। लेकिन इ बात अवस्य मानपरिकि जस्तहक एक्थोर गाड़िह तानकलाग इन्जन व पहिया के जरूरत परथ वस्तहक नेपालि भासाफेन रास्ट्र भासा यानिकि गाडिके इन्जनहो व और भासा वाकर पहिया हो एक्थोर पहिया व इन्जनलेक केल गाडिनै चलत वस्तहक इ नेपालरूपि गाड़िह नेपालि भासारूपि इन्जन लेक नेपालिरुपि यात्रिन कदापिफेन उन्नतिके उच्च सिषर बर नैं लैजाई स्याकि काकरकि जातिरुपि डव्बम जातिय भासारुपि पहिया नै लागल वर्से। एक्थोर घर तलुकसम अन्धार रहथ जहलुकसम प्रत्यक क्वाठम लाइट या दिया नै बरत वस्तहक नेपालफेन तबसम आग्घ बढनै स्याकि जबसम प्रत्यक क्वाठम जातिय भासारुपि दियानै बरि। वहुत मनै थारु भासाह आग्घ बढैना विसयम आलोचना कर्लं ई हुकनक महान भुल हो

काकरकि अध्यक्ष माओ त्सेतुङ्ग कैरष्ल, "हमार सक्कु साहित्य व कला जन समुहके लाग हो व सबसेपहिल मजदुर, किसान व सिपाहिन्के लाग सिर्जलक रहथ व हुकनक उपयोग के लाग रहथ" कलसे थारु किसान और भासाम सम्झनै सेक्त या और साहित्यसे फायदा उठायनै सेक्त कलसे का हम्र ऊ साहित्यह सब गरिब किसानके साहित्य कनात? का नेपालि किसानम चेतना लेन्नाम थारु भासा के खाचो नैं होत? बहुत बाता खास कैक कनाहोकलसे नेपालके किसाननै थारु हुइत वह बर्से थारु भाषाके फें विकाश हुइना अत्यन्त आवश्यकबात। हमन इ कहपरिकि यदि कौनोफेन असिक्षित व अचेतनसिल जातिन सिक्षित व जाग्रित करैना बात कलसे वाकर जातिय भाषाह आग्घ बढाई पर्थी काकरकि कौनोफेन मनै आपन भासाम बात मज्जासे समझ दर्य वहत्र्मे थारु भासाके फेन बिकास हुईपर्ना अत्यन्त जरुरि बात।

इ समयम हमन जौन नै छापगैल या भित्रिरुपम रहल गीतह छाप्क जन्त-के सामनें लेन्ना हमार पहिलक काम वात व पाछ-पाछ प्रत्यक ठाऊसे यह भासाम पत्र-पत्रिका निकैति रह पर्ना बात। मै इ बात जोर देक कथुकि यदि यह भासा साहित्यम स्थान पादारित हमार छेग्रि भेंड़ि चरुइया भैयन्त कबि, लेषक, बिद्वान बनहि व ऐसिन गन्जा कदापि नै बन्ल रहहि।

(४) सिक्षा:—मनैनके नैतिक, सारिरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास कर्नाबात त वाकरलाग एकमात्र उपाय बात ऊ हों सिक्षा। सिक्षा ऐसिन चिज हो जौन मूर्खह-पण्डित, गन्जाह-चत्तुर, आन्धरह-दिथार, अउन्नतिह-उन्नति यानिकि इ कहपरिकि बिज्ञान तरच उप्पर कब्जा कर्ल बाट त, सिक्षा कब्जा कर्लबात बिज्ञानह। आज जत्रा जमाना, रिति-रिवाज सभ्यता बदल्ता उ सब बदल्ता एकमात्र सिक्षासे। सिक्षा ऐसिन चिजहो जौन पहाड़ह मैदान बना-देहथ, रेगिस्तानह उपजाऊ भूमि, दुनियाह झलामल पार देल बात एकमात्र सिक्षासे। मै इ बात छाति ठोक्क कह सेक्यु कि यदि सिक्षा नै हुइत त हम्र मानव पसुव रति लेकिन प्रकृतिके पुजारि बिचारा थारु किसानह का थाहा कि सिक्षाके महत्व अत्राभारी बात कैक? "पढगुने कौने काम हर जोते धान-धान' कना कनहि प्रत्यक गोचालिन्के जिभिम बात। बच्चा जमंल भेरि, गोरु चरहाय, वरहुइल कमाय। वरसे

छोटिसन काममा लगलरथ। हमार जाति विद्या कमेनासे धन कमैना लालचि बाता एक्थोर असिक्षित बिदुरह का थाहा कि धनवर हो कि विद्या कैक? "एक-त्रक पाथि नैं जन्तुर पर्वत्या मुरिभर जन्तु कद अक पढना वढना नै जन्तु काम कर जन्यु कथ। का हम्र इनै सुन्लहुई हमार पुर्वन छारा करनै मिलत कैक जग्गा वस्तह देलक? का इ तै सुन्लहुई ५०) रुप्यक तम्सुकह ५००) सै वनैलक्? ई कौन कारणसे हुइल त एकमात्र सिक्षासे। एक फ्यारा ई जमानावर फेन नजर लगाइ त देखिव मनैंत पसु हुइलि। पसुत नलिस बहुत मार व भार लादपैलसे चिल्लैय व आपन सिङ्घिलैक मर्थ लेकिन हम्र थारू जातिम ऐसिन मारु परल वात भार परलबाट कुच्छु नैं कर सेक्ल हुइति अधिकारबाट सदुपयोग वित्ता, कमाइति और जनकल्याग? काहो? का हो? अमिन कथ भगोन्वा अस्तह कराइल व म्यार भाग्य बात अस्तह। मैं पुच्यु कि हुकनक भाग्य कैसिन बढिन व हुकनक भगोन्वा काहा बाटिन? धर्मक नाऊलेक सारा बिकल बाटि कौरिम। पुरान जमाना गैल, नया जमाना आइल। इ जमानाम साधु ठगवन्ल, बल्या—डाका व गुण्डा बन्ल, आलिस भलादमि बन्ल, सिद्ध जोगि गिद्ध पैल, लेकिन हम्र थारु जाति आनिन नै चिन सेकल हुई दुनियाह। हम्र बिम्रल बाटि इ जमानासह नैं बुझ्क। मनैंन जमाना अनुसार चलपरथ। का प्राचिन अबस्थाम मनै रूप्पोक बोक्रा लगाइत वह बोक्रा आँजकाल सुहाई? का ई जमानाफेन पथ्रा माटिह पुज्क केल हुई? ई जमानाम त मनै वन्क न्याङ्ग सिप पर्ना बाट। इ सब सिपुइया त हो एकमात्र सिक्षारुपि गुरु। आव गोचालि हुक्र सब्ज सिक्षाम जोर दे।

(10) प्रत्यक गोचालि सिक्षाके महत्व अत्याभारि बात कैक सम्झल हुइनि लेकिन अप्नहुक्र भ्रम परल हुइनि कि कमसे-कम सबजह कैसिक साक्षार करैना विसयम? ई एक्थोर बरि बिवादास्त प्रश्न हो। महिह जहासन लागथकि ९०% साक्षार वनाइकलाग प्रत्यक ३-४ गाऊके बिच एक्थोर रात्रि पाठसाला हुइना अत्यन्त आवस्यक बात काकरकि इ जाति कामसे एक घरिफेन फुर्सत नै पाइत कलसे स्कूलमा जैमा समय और कहासे पाई। आग्र आइल मास्टरके समस्या। याकर विसयम मै ऊ गोचालिन्से विनय अनुरोध कर्थुं जे गाऊम पढल लिपल बात चाहे ऊ कर्मचारो ह्वाय चाहे ऊ विद्यार्थि या चाहे ऊ वर गृहस्थि रातके आपन समय वस्तह बिता-

इलसे दुई-तिन गाऊके बिच एक्ठावा लर्का जम्मा कैक आपन समयह पढैनाम खर्च कै देहि। एक्थोर मास्टरके बिना सारा मनैंनके जिन्दगि वस्तह पसुहोक बितता कलसे आपन समयह ऐसिन समयम खर्च कर्ना एक्थोर महान काम हो, यह नै समाज सेवा हो, यह नै जनप्रिय काम हो। जस्तहक एक्थोर बरल दियलकनै और नै बरल-दियह वरा जाइथ। वस्तहक हमार नेपालम फेन अशिक्षित मनै नि बरल दिया हुइत, यहिह बराय लगैनाम सहाता कर्ना एक्कथोर मनैंनके कर्तव्य नै हो वल्की प्रत्यक सिक्षित नेपालिन्के कर्तब्य हो यदि ऐसिन नै करबित अन्धारम च्वार डाका नेपालके सब चिज लुटक लै जहि व एक दिन पुरा नेपालिन फेन बेपत्ता पार दरहि।

(11) याकर साथ-साथ गाऊ घर्म जे किसान बात, प्रत्यकके घर्से एक-एकथोर लर्का स्कूलम पढाय लगैना हमार दोस्रा काम हो। यदि प्रत्यकके घर्से एक-एकथोर लर्का सिक्षित होजैहित हमन सुधर्नाम झन कम समय लागि। हुइनात लर्कंनकेल पढाक केल कब्युफेन हम्र प्रगति कर नैं सेक्वि, लौरेन्फे पढाइपर्ना अत्यन्त जरुरि बात लेकिन जलुकसम लर्का पढैनाम जोर नै देवि तलुकसम लर्कि पढैनाम जोर कदापि फेन नै देहि काकरकि एक्थोर सिक्षित मनैया नै जानथकि जन्नि थारु एक अंग हुई हकैक।

गरिबि :—

❀

(12) मैं ई समझ क बरि अक्कु - मक्कु पर रनुकि हम्र थारु किसान सुत्क उट्टि कि कामम दौरना झोलिपल्ला नै हुइतसम काममा पलारना तबफेन खाई नै पुगल देख्क महिबरा ताजुब लागथ। घर्चा कना हो कलसे सब चिजम साधारण घर्च बात, पैना मकैक ढ्यारो सिबाय और नै हो कपरा मारकिन ठेथ्वा, भारत्त - माटि व गिल्टि सिबाय और नै हो त मैं फेन वह बात दोहराइतु कि हमार कमाहि कहा जैथा वहम बर्षाम भुष मुव पर्था। ऐसिन देख्क महिह अंग्रेजि कवि गेटे के कविता याद ऐथा जौन तर बात :—

"हमार छोटि - छोटि कामम नै नुकल बा कुन्जि
जौन स्वर्गिय द्वार हमार लाग घोलि
औ मनै देषि बहु स्वर्गिय दृश्य
बरि झट्ट नहि - न
बरि ढिल्क"

वस्तहक हम्र थारु किसान फेन सबका सब गरिब हुइना कारण यह बातकि हमार छोटि छोटि कुरितिम नुकल बात इ चिज । हुइनात थारु किसान केल गरिब नै रहथुइहि और किसान फेन रहथुइहि लेकिन थारु किसान सप्रक छोकं दिन प्रतिदिन बहुसंख्यक रुपम बिग्रति जाइत ।

कौनोफेन चिजके सप्रना व बिग्रना कारण व तरिका रहथ । यदि वह बिग्रलक कारणह सपार देलसे उ सपर जाइथ । मानले एक्योर मनैय निमोनिया रोग लागरलस के अवस्यफेन मुअ परहिस लेकिन हम्र वारक उल्टा इ पत्ता लगाई कि इ कौन कारणसे हुइल व याकर लागका औसधि कर परल केक कारण व पत्तालगाके औषदि कर्लसे ऊ मनैया अवश्यफेन चोषाजाई वस्तएक हम्र थारु किसानफेन सबका सब गरिब हुइना कुछ कारण फे हुई जौन निम्नलिखित बात—

(क) जार-दारु :—जार-दारु पिना त हम्र थारु किसान पैलहेसे बर-दान पाक आइलसक लागथ। हम्र जार नै पिथि जहर पिथि, दारु नै पिथि बिस पिथि। मैं ई कहबेर नै हिचकिचैम कि हमार जात खास केक जार दारुअ-पिक बिग्रल हो। भक्रिक-भक्रिक जार दिहुरार धरल पैवि, दुई पथिक तिन्यो ल-वा लेहत देख्बि, २४ सौ घन्टा जारम भुलल रथि, घरम जलुकसम अनाज रलसे फाक-फाक खैना, बरैलसे भुषमुना जैसिन समस्या पातहमार। जार दारु पिक हुईक बाटि गम्बरग्याज। जलुकसम हम्र असिन अम्मलह नै छोवि तलुकसम हम्र उन्नति वर नै लग्बि। बहबर्से जाँर बनैना चलन सुस्तसुस्त हटैति जाइ पर्ना बात।

(ख) भोज बिहाम :— भोज बिहाम प्रत्येक ठाउंके नियम व रिति-रिवाज छुट्ट-छुट्ट बात। मैं यहाँ दाङ्के बारेम दिक्वे चर्चा करम। हमार दाङ्म भोजम जार दारु सै सिकार नै होक नैं हुइथ आपन सारा सम्पत्ति भोजम फुकदथं। भोजम जिता व जार दारु नै होक नै स्वाज

हुइना नियम बनल बाटन काहुन ? एक प्यारा रझेत के। अतिथि स्री राम दयाल चौधरि जि आपन वहाक भोजमक रिति रिवाजके बारेम चर्चा कर्ति कलह, 'हमार वहा भोजन दारु, जार, जिता कुछ नै चलैति। दारु जाँर के सटाहा चाय भुजा रोटि चलैथि"। महिह ऐसिन चलन बहुत मजा लागल काकरकि हमार जारसे नै खर्चा बाहथ व कौनो नसाम झगरा झाटी ष्यालथ त कौनो कहोरि मस्ताना होक धन्मनाल रहथ। झाङ्गानैपैना, सट्टा पट्टा, जारदारु चलैना पठलहारि पठाय जैना इ सब कुरिटि ह छुटाई पर्ना एकदम आवश्यक देख्ल बाटु।

(ग) निश्चित आय व्यय नै होक।

नोट :—पाठक गण १ फर्म और बढना वसैं गरिबिके टापिक विस्तृत रुपम रहल छोटकरि म बनाय परल म व राजनैतिक चेतनाके वापिक डिल नैं कर पाइल म लाचार बाटु।

महि जहासम लागथ हम्र थारु किसान उप्पर देपाइल कुरितिह जलुकसम नै छोरबि तलुकसम नै सप्रवि व जलुकसम उप्पर देपाइल रास्ता नै अपनैबि तलुकसम नैं आग्ग बढबि आंजके जुगम हमार आर्थिक, राजनैतिक व समाजिक समस्या दिन प्रतिदिन जटिल हुइति जाइता इ जटिल समस्यह सुल्झाइकते हमन चार आँष चार कान बनाई पर्ना बात। आंज हम्र दयापति इ समस्यह सुल्झाइ नै सेक्क हमार थारु किसान हजारो के संष्याम तराई, भारत वर लाग्त। इ हमार षास कायरता व अशिक्षा के प्रतिक हो।

उप्पर मै जत्रा बर्णन कनुं ऊ कुरिति तल्हुक सम नै हटि जलुकसम हम्र थारु किसान सिक्षित नै हुइबि। वहवर्से आंजके युगम बिद्या धन नै सब्से भारि धन हो। आँज अप्नहुक्र दयाष्ति अप्नहुक्न्के लर्का नै पत्रिकाके रुपम आपन आवज ब्वाल दत गैल। यह आवाज नै अधिकार के माँग हो, यह आवाज नै हुकनक पिर मर्का हो, यह आवाज नै समान्ता के चिन्ह हो। वहवर्से सब गोचलि हुक्र आब्से एक्क मुठ होक आकुर आवाज निकर्तिरहि व इ दृढ प्रतिज्ञा करि कि एक दिन हम्र आपन आवाज पूरा छोबि कंक।

म्वार बिन्ती, सुधार।

सुरेन्द्र कुमार चौधरी
बैवाङ्ग (पश्चिम दाँग)

मैं कत्रा सरल हूँ !
मैं कत्रा गलत हूँ !
सुघ्घर डगर छोड़क, घीनाहोन डगरम लग्यु
मुअ खोज्नु, बिना पत्तक
जिय खोज्यु, किरा पर्क
मैं कत्रा हराम हूँ !
मैं कत्रा हत्यारा हूँ !
शोषण के विरोध कयुँ !
कत्ना गफ लड़ैथुँ
तब फेन
मैं खुद शोषण कथुँ
महीं लिख्ना, पढना ध्यान नै हो
देशक सेवा कर्ना ध्यान नै हो
दुखीन के दुःख हटैना ख्याल नै हो
उल्ट दुःखोन क्षन दुःख देथुँ
सिग्रेट, बीड़ी पीती बातुँ
जाड़, रक्सी पीती बातुँ
ईहम मैं झुलल बातुँ
असीन त बातुम्वार चाली–माली
तब फेन कोशोश कर्ती बातुँ
सुधार ! सुधार !! सुधार !!

जागो जागो गोंची

'सन्तोषो'
दाङ् बेलुवा (नारायणपुर)

ए! हमार दादु भैया, ए! हमार बिदी।
कहोंर लेव अब हन्त्र जैना, मुअ पर्ना होकि॥
दादु भैया काम कैक, बरीरात अईना।
कब्बो कब्बो खैना नै त, वस्त सुत पर्ना॥
जिमदार हुईल जिम दरवक, हन्त्र हुईं कमैया।
असिन अब त नै सेक जाई, उठो हेरों भैया॥
दिन रात खेती कैक, घर नै हो खैना।
एक आडर देल सेफे, लुसफुसाक जैना॥
असिन आब नै हुई हेरो, जग्ना गित गाओ।
आपन दुख दूरकर्ना पक्का बात करो॥
ए! हमार बहिन्याहुक्र, ए! हमार भादु।
ए! हमार बाबा काका, ए! हमार साढु॥
तुरह भर बुढान जैना, गोंची म्वार मुअटा।
'मै ईहाँ नहि बैठस' उह जाईकला रठा॥
दिन भर हर जोतना, संझ्या घर आक।
एक टठिया मारखैना, औरका चाज बात॥
घरेरीक छिटी मिटी, एकठो डिहुवा रह।
उमसेफे लैगईल, अध्या आवा का रहल॥
साहित्य फे नै हो हमार, उह खेत्वक आली।
संस्कृती फे नै हो हमार, उह कना साली॥
सबकु जन जागी झट्ट काम करी सोची।
सुत्ना व्यालानै हो हमार, जागो-जागो गोची॥
ए! हमार काकी दाई········।

नेपालके सपूत (झुम्रा)

कामता प्रसाद चौधरी
देऊखुरी (पचुहाया)

ए हाँ हरे नेपालके सपूते हो उठो झट्टे उठो,
पूर्व-पछिऊ राज डगरा बनाय सब उठो ॥ १ ॥
एहाँ हरे तुहुँ उठी चल्बो हम उठो जैबो,
तु जो कोरबो डगरिया हम माटी फेकबो ॥ २ ॥
एहाँ हरे तु जो बजैबो बाजा हम गीत गैबे;
स्वर्ग ओ मृत्य पताले इहेरै सुख पइबो ॥ ३ ॥
एहाँ हरे कोटिन तन कोटी मन एक ओर घुमैबे,
जियती जगैबे शक्तिया हमहू डगर कोरबै ॥ ४ ॥
एहाँ हरे मेचीसे कालो तक करम पैथ जोरबै,
बनैबी स्वर्गै भूइया स्वर्ग अस परबै ॥ ५ ॥
एहाँ हरे भगीरथ अस स्वर्ग गंगा धरतिया बनैबै,
नेपालीन्के पीर ओ मर्का दुख सब धोइबै ॥ ६ ॥
एहा हरे जीतके शंख फूकबी सुख शान्ति लनबै,
बुद्ध जैसे नामी हमहू हुई जैबै ॥ ७ ॥

गोचाली

टीकाराम चौधरी
बर्दिया "कमला"

दुधुक्क बैठक जिनकरो आराम चुम्मर गोचाली,
चित्रा बा पहिले अप्नेह अप्न सक्कुज गोचाली।
दिन ओ जोहन्या हम्रह हुइटी जन्मलक देशम,
फिजरैना बा उजरार सक्कुज मिल्क आपन देशम।
प्रकृति देबी अप्नेह आपन हमन ह बोलाइता,
स्वर्ग फे आपन प्रकृतिसे मिल्क हमनह देखाइता।
हम्रहे सक्कु गोचाली हुक्र लटवा बनल बाटी
आपन आग देहल बथा खाई नै सेकता।
उप्पर से हमन नक्षत्रहुक्र इसारा करत,
सक्कुज मिल्क थुन्यार कामम आग जाव कहत।
सक्कुज मिल्क इ पृथीवी म कुछ कर पर्ना बा,
जन्मलेलक इ धर्तीम हमन बुझ पर्ना बा।

पुकार :—

रच०–भक्तकुमार चौधरी
दे० मानपुर।

देशके झण्डा उठाके
चोलो चोलो नेपाली ॥१॥
दाइक कहना एहे हो
चोलो हाली नेपाली ॥२॥
हमार दाइ रोइती बती
गहना-गहना गुरिया बिना ॥३॥
अबरे दाइ हसती बती
घल्ले गुरिया थोसिया गहना ॥४॥
संगे हंसना संगे खेल्ना
हमार दाइ झुठरार बती ॥५॥
हिरा मोती सोना चाँदी
सिंगार पतार अबरे बती ॥६॥
दाइक कहना एहे हो
पुगो हाली टिप्पामें ॥७॥
नै ते छाओ गइलो रे
खोली खापत गंजरी में ॥८॥

पुरान पन्ना उल्टाओ
का का कइले पुर्खनके ॥९॥
कैसिक मही बचैलं
नाक बढैलं दुनियां में ॥१०॥
उत्तर ओर औरे बा
चांदी देखके ललचाइल बा ॥११॥
दखिन ओर भारत बा
आँख गरले मुह बैले बा ॥१२॥
तरे पथ्रा उप्पर पथ्रा
तरूल हस बिचे में ॥१३॥
आंजर-पांजर खटरा बा
रहले किल दाइक कोना में ॥१४॥
भाला लेब मुंदार लेव,
सूरज चन्दा झण्डा लेव,
चम्को - चम्को नेपाली
काटो चुट्टी बेरिन्के ॥१५॥

सक्कुज पढ़ी

कृष्ण प्रकाश चौधरी
डाँड़ाचिस
दाँऊ

समझी बुझी खूब ध्यान लगाई, युग बदलल लड़कनत पढ़ाई ।
युग बदलल काहोकबो, समय फिर्ना होख,
ईहकारण हेरो भईयो, बिद्या सिखना होख ।
हम्रबिना शिक्षीत हुईल, हेला ह्वायपर्ता,
अशिक्षीत बिना बुनियाभरीक कहाँर हवायपती ।

बिन्तीवा ओमोरे गोचाली, युगबदलल लड़कनत पढ़ाई ।
अशिक्षीत बुद्धि बिना, भुत - प्रेत मन्ना,
शिक्षीत हुई बिद्याकरी, धोङगफे हटैना ।
बिध्याबिना हेरोभैयो अन्ध बिश्वास कर्ना,
अशिक्षीत ओसें हेरो दुल्लफे ध्यारमिल्ना ।

समझी बुझी ओमोरे जातीभाई, युग बदलल लड़कनत पढ़ाई ।
शनैमसै सबसें हेला, हम्रकाकर हुइली,
अशिक्षीत बुद्धि बिना, गँवार हम्रहुईली ।
इह कारग सक्कुजन पढ़ना कलक होख,
पढक हमार नोक्सान हुइना कुछुनही होख ।

बिन्तीया ओमोरे गोचाली, युगबदलल लड़कनत पढ़ाई ।
बर्षाभर खेती कैक खायनही पुग्ना,
सक्कु चिजीक ढंग सिखि खाय लगाय जन्ना ।
बुद्धि बिना समाजपफे, बोलनही सेक्यी,
जित्ना बातफे मैयामारक, घर घुस्क अँथी ।

सम्झी बुझी खुबध्यान लगाई, युग बदलल बड़कनत पढ़ाई ।
देस बिददेससे आक औंर्जमाड्क गुजरकर्ना ।
अप्न खेती कैक हमन, खायनही पुग्ना ।
गाऊ - घुरम न्यागत घुमत जाँर पियजन्ना,
भात खाक सेक्लसेफे जार पिक जैना ।

सम्झी बुझी ओमोरे जाती भाई, युगबदलल लड़कनत पढ़ाई ।
तबत हमन खायपुगी लड़कनफे पढैबी,
पढ़क हम्र शिक्षीत हुइबी, गुलामफे नै बन्बी ।
म्वार आसा और नै हो, शिक्षीत थोरथोरहुईना,
ठग ढाठ हमन सेतिम, हप्काए नही पैना ।

सम्झी बुझी खुबध्यान लगाई, युगबदलल लड़कनत पढ़ाई ।
सक्कुजन आग बढ़ल, हम्रसद्क पाछ,
पढ़क हम्र शिक्षीत हुई, नहीं रबी पाछ ।
ईह कारण कलक होख, शिक्षीत हुइकैक,
प्राथंना मै करततु, कलक मनबी कैक ।

आँजुक सजना लौव सजना

'केशर बहादुर चौधरी'
बर्दिया (ढेलफुकनी)

हरे चारी वर्से घेरल परवतवा रे! माझ बिच जनता,
उठो जन्ता राईफल तखाल लेक, फटहन से लर ॥
हरे मिली जैबि सबहु किसान रे! सफलता हम्र पयबी,
फुटि फाहा जब जयबि, फटाहा बल पैहीं ॥
हरे जागो र जागो सबहु किसान रे! सामन्ती उपर जागो,
जब सम्म दबल हम्र रहबि सामन्ती दुख देहही ॥
हरे बाउँ हाथ भिरबो पिस्टोलिया रे! दाहिन हाथ राईफल,
बिच डगरी भेट होइ फटाहा, फटाहा मासी देहबो ॥
हरे संगकि सहेलिया र भैयो रे! का काम करी हम्र,
हाँथ-हाँथ छेनीर पकरी, पाहाड़ फोर जाई ॥
हरे पहाड़ त फोरी र भैयो रे, डगर हमार खुली,
जब सम्म दबल हम्र रहबि, यहरो गति होई ॥
हरे उठो-उठो लालवीर संङ्घरीया रे! पाहाड़ न फोर,
कसी झट्ट कम्मर लरबि, विरोधीन्से ॥

शुभेच्छा

प्रिय बिकाशोन्मुख गोचाली पत्रिका

मोर बगीयक भूमिम उज्जल
रङ्गी बिरंगी फूलके
ई छोटी छोटी बिरुवा हुक्र
तोहार प्रगति के कामना कर्ति
इहें से तत्पर हुईल से फेन
इँहाँ उल्लास के साथ
नाचत,
तोहार
ई शुभ - जन्मोत्सव मनाईकते

आपस आपसम चुम्बन कर्ति
तुहीन ईह प्रगति करक ते
तुहिन शुभ - कामना देती
मोर बगीयम झुम्ती बाल्
तोहार
प्रगति के कामना कर्ती !

रचनाकार
अशोक कुमार चौधरी हे क ली
पश्चिम दांग

यहाँक किसान

ढुण्डिराज चौधरी

यहाँक किसान एक्थोर भिखमंगा हो,
खाई नै पैना दरिद्री हो
फाटल चिठल गलिक बीरा हो,
मद भट्टीक रवसीवाज हो
अन्याय अत्याचार म पिस जवैया हो
एक्थोर लाट सुध जन्ता हो
मेहनती ओ धर्ति के सच्चा सपुत हो,
बीर हो कर्ण धार हो
दिनभर कामकैक खाई नै पवैया हो,
अशिक्षित एक्थोर बिचारा हो
सच्चा देशके पोषक हो
लेकिन अप्न हे ठग जवैा यहो
मैं दयल्तु इ किसान जरुर अस्त नै रहही,
मैं जरुर जान्तु हिक्र एकदिन आपन अधिकार मङ्गही ।
यह माङ्गनै संघर्षके आवाज हो,
यह माङ्गनै क्रान्तिके नारा हो ।
यह माङ्गनै गरिब किसान के रोदन हो
यह माङ्गनै समान्ता के चिन्ह हो
यह माङ्गनै स्वतन्त्रता के छुटकारा हो
यह माङ्गनै शिक्षित मनैन के बिद्वता हो
ई किसान नंगरा हो.
सहि डगरम न्याङ्ग नै सेकुइया हो
ई किसान अन्धरा हो
सहि डगरम भुला जवैया हो,
इ समयम याकर लाग दर्कार बाट
हाथ पकरक डगर देखुइयक,
याकर लाग दर्कार बात,
शिक्षित व जाग्रित करुइया मनैके
याकर लाग चाह बात
प्रत्यक किसान के संगठन के
याकर लाग जरुरी बात
शोषित बर्गन्से क्रान्ती के